प्रयागराज, रविवार 23 मार्च 2025 से शनिवार 29 मार्च 2025 तक
वर्ष-13 , अंक-11
पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये

T M

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

हिन्दी साप्ताहिक

17.03.2025

18.03.2025

19.03.2025

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी

फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।

Enjoy Publicity

Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480

20.03.2025

21.03.2025

22.03.2025

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र में होली मिलन समारोह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
प्रयागराज। नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र में होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया है मुख्य अतिथि (श्री अरविंद राय, अध्यक्ष उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक संघ) स्थानः नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र इस अवसर पर केंद्र के छात्रों, शिक्षकों, और कर्मचारियों ने एक साथ मिलकर होली के रंगों में खुशियों का आनंद लिया। समारोह में संगीत, नृत्य, और होली के रंगों का आनंद लेने का अवसर था। केंद्र के समन्वयक ने कहा, ठहोली का त्योहार हमें एकता और प्रेम का संदेश देता है। हमारे केंद्र में होली मिलन समारोह का आयोजन करने से हमें अपने छात्रों और शिक्षकों के साथ जुड़ने का अवसर मिलता है।समारोह में केंद्र के छात्रों ने संगीत और नृत्य की प्रस्तुतियां दीं, और सभी ने होली के रंगों में खुशियों का आनंद लिया। केंद्र के होली मिलन समारोह की कुछ झलकियाँ संगीत और नृत्य की प्रस्तुतियां होली के रंगों में खुशियों का आनंद छात्रों, शिक्षकों, और कर्मचारियों के साथ मिलना-जुलना होली के त्योहार का जश्न मनाना।

नवीन योजना मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान में आवेदन करने हेतु कार्यशाला का आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
प्रयागराज। जिलाधिकारी महोदय की अध्यक्षता में दिनांक 22.03.2025 को प्रातः 10:30 बजे जिला पंचायत सभागार में समस्त राज्य की व्यक्तिगत प्रशिक्षण संस्था प्रयागराज के प्रधानाचार्य के साथ नवीन योजना मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान में आवेदन करने हेतु कार्यशाला का आयोजन संपन्न हुआ जिसमें लगभग 300 लोग द्वारा भाग लिया गया भारी संख्या में लोग उत्साह पूर्वक लगभग तीन घंटे चले कार्यक्रम में भाग लिया गया कार्यशाला में आयोजन जिला अधिकारी महोदय द्वारा व्यक्तिगत संस्थाओं के समस्त प्रधानाचार्य को निर्देश किया गया कि प्रत्येक संस्था में 20-20 नवीन योजनाएं के अंतर्गत विभागीय पोर्टल पर आवेदन दो कार्य दिवस के अंदर कारण साथ ही साथ जिलाधिकारी महोदय द्वारा प्रधानाचार्य राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नैनी जिला खाद्य ग्राम उद्योग अधिकारी जिला सेवा योजना अधिकारी प्रयागराज को यह भी निर्देश दिया गया कि प्रत्येक कर दिवस के सहायक में संस्थाओं द्वारा पोर्टल पर भर आए गए आवेदन की अद्यतन प्रगति से उपयुक्त उद्योग नोडल अधिकारी को अवगत कराएंगे एवं पूर्व में संस्था में जो भी छात्र-छात्राएं प्रशिक्षण प्राप्त कर लिए हैं उनको अपने संस्थानों में आमंत्रित करते हुए नवीन मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान योजना के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए उक्त योजनाओं के आवेदन कारण साथ ही जिला अग्रणी बैंक प्रबंधक को निर्देश किया गया कि प्रत्येक दशा में 24 3.2025 तक सभी लंबित आवेदन पर स्वीकृति वितरण की कार्यवाही कर कर उपायुक्त उद्योग जिला उद्योग प्रोत्साहन तथा उदगमिता विकास केंद्र में माध्यम से रिपोर्ट उन्हें प्रस्तुत की जाए।

अशरफ के साले सद्दाम की रील वायरल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
प्रयागराज। अशरफ की पत्नी जैनब उर्फ रूबी का तीसरे नंबर का भाई सद्दाम पूरामुफ्ती थाने का हिस्ट्रीशीटर है। वह बदायूं जेल में बंद है। उस पर नौ मुकदमे दर्ज हैं। अतीक अहमद गैंग के सक्रिय गुर्गे और उसके भाई अशरफ के साले सद्दाम की एक रील सोशल मीडिया पर वायरल हुई है। कोर्ट में पेशी के लिए जाने के दौरान बनाए गए इस वीडियो के बैकग्राउंड में धमकी भरा गाना भी लगाया गया है। इसके बोल 'यूपी में घर बैठे मर्डर करा देंगे' हैं। अली अतीक अहमद.786 नाम के इंस्टाग्राम अकाउंट पर यह रील वीडियो अपलोड किया गया है। 19 सेकेंड के वीडियो की शुरुआत में सद्दाम प्रिजन वैन में बैठे नजर आता है। कुछ सेकेंड बाद वह कोर्ट में किसी कागज पर हस्ताक्षर करते और फिर पुलिस सुरक्षा में जाते दिखाई पड़ता है। आखिर में वह फिर प्रिजन वैन में बैठे नजर आता है। वीडियो के बैकग्राउंड में एक गाना सुनाई पड़ता है। इसके बोल 'खास यार से यूपी में घर बैठे मर्डर करा देंगे, तू जिनके बल पर उछलैसे हम उनको भी मरवा देंगे' सुनाई पड़ते हैं। रील वीडियो कब और कहां का है, फिलहाल इसका पता नहीं चल सका है। जिस अकाउंट पर वीडियो पोस्ट किया गया, उसका संचालक कौन है, इसकी भी कोई जानकारी नहीं मिल सकी। उधर, एडीसीपी नगर अभिजीत कुमार ने ऐसे किसी भी वीडियो के संबंध में जानकारी होने से इनकार किया है। उनका कहना है कि इस संबंध में जानकारी जुटाई जाएगी। अशरफ की पत्नी जैनब उर्फ रूबी का तीसरे नंबर का भाई सद्दाम पूरामुफ्ती थाने का हिस्ट्रीशीटर है। वह बदायूं जेल में बंद है। उस पर नौ मुकदमे दर्ज हैं। पिछले साल जून में उसकी हिस्ट्रीशीट खोली गई थी। उसका भाई जैद भी उसके साथ हिस्ट्रीशीटर बनाया गया था। जैद भी कई मुकदमों में नामजद है। जैनब उमेश पाल हत्याकांड में फरार है। उस पर 50 हजार का इनाम घोषित है। 26 फरवरी को बरेली पुलिस ने गैंगस्टर के मामले में सद्दाम व उसके दोस्त लल्ला गद्दी की 5.29 करोड़ रुपये की संपत्ति कुर्क की थी।

सरसेंडी विद्यालय के विद्यार्थियों ने वार्षिकोत्सव में प्रस्तुत किए रंगारंग कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) बारा। प्रयागराज विकास खण्ड जसरा के उच्च प्राथमिक विद्यालय सरसेंडी में शनिवार को आयोजित वार्षिकोत्सव में बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लिया। कक्षा आठ के बच्चों की विदाई कार्यक्रम में सभी की आँखें नम हुईं। बेसिक शिक्षा विभाग के निर्देश पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे खण्ड शिक्षा अधिकारी अखिलेश वर्मा ने दीप प्रज्वलन कर कहा कि शासन की मंशा अनुरूप ऐसे कार्यक्रम बच्चों के उत्साह वर्धन तथा अभिभावकों में जागरूकता लाने हेतु नियमित रूप से किए जाएं। कहा कि ऐतिहासिक स्थलों एवं प्राचीन सभ्यताओं से परिचित कराने हेतु शैक्षिक भ्रमण भी किए जाने चाहिए। विद्यालयों की नियमित देखरेख करना भी अभिभावकों का अधिकार है। सांस्कृतिक कार्यक्रम में अग्रणी रहे बच्चों में नाभिका गुप्ता, रितेश, आदित्य, बृजेश, विजयकांत, आयुष, शशि, नव्या, रिया, सिया, श्वेतम, विजयलक्ष्मी, सहित दर्जनों बच्चों को पुरस्कार वितरण किया गया। बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने वाले अभिभावकों को भी पुरस्कृत किया गया। विद्यालय में बना सेल्फी प्वाइंट अभिभावकों एवं बच्चों हेतु आकर्षण का केंद्र रहा। इस अवसर पर एआरपी सतीश कुशवाहा, मयंक धर द्विवेदी, मनोज तिवारी, प्रधान प्र. राम भारती, अनुराग मिश्रा, हरिशंकर बिंद, सईदा बीबी, संतोष कुमारी, श्याम सुंदर द्विवेदी, राकेश कुमार, कंचन सिंह, प्रीति श्रीवास्तव, रेखा रानी, सुजीत कुमार, महेंद्र कुमार, विजय प्रकाश, राज कुमारी, सरिता देवी सहित सैकड़ों अभिभावक एवं संभ्रांत नागरिकों ने कार्यक्रम को सराहा। संचालन सुमंत भार्गव ने किया।

सीलिंग फैन के हैंगिंग रॉड से मारकर पिता की हत्या, पैसा न देने पर नाबालिग बेटा बना कातिल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
प्रयागराज। शराब के लिए पैसा न देने पर नाबालिग बेटे ने पिता की हत्या कर दी। विवाद के दौरान उसने सीलिंग फैन के हैंगिंग रॉड से वृद्ध पिता के सिर पर वार कर दिया। इससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। शराब का पैसा न मिलने से 16 साल के किशोर ने अपने पिता की हत्या का दी। विवाद के दौरान सीलिंग फैन के हैंगिंग रॉड से बेटे ने पिता के सर पर वार कर घटना को अंजाम दिया। घटना के बाद वह खुद ही घर के पास गश्त कर रही 112 नंबर पुलिस को इसकी जानकारी देते हुए हत्या की बात कबूली। कौंधियारा पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लेते हुए मृतक वृद्ध की बेटियों को घटना की जानकारी दी। बेटी की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी किशोर के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। कौंधियारा थाना क्षेत्र के सेहरा गांव निवासी भारत लाल पटेल (70) पेशे से किसान थे। उनका एक पैर खराब था। बृहस्पतिवार रात साढे ग्यारह बजे के आस-पास नशे की हालत में उनका 16 वर्षीय बेटा घर पहुंचा और शराब के लिए पैसे की मांग करने लगा। मना करने पर बाप-बेटे में विवाद शुरू हो गया। पड़ोसियों और पट्टीदारों ने बताया कि अक्सर बेटे और बाप में विवाद हुआ करता था। जिसके कारण किसी ने इसको गंभीरता से नहीं लिया। विवाद बढ़ने पर बेटे ने सीलिंग फैन के हैंगिंग रॉड से पिता के सर पर वार कर उनकी हत्या कर दी। इसके बाद वह भागकर गांव के पास ही नहर पर खड़ी 112 नंबर पिकट पर पहुंचा और बताया कि उसने अपने पिता की हत्या कर दी है। उसे गिरफ्तार कर लिया जाए। पुलिस उसकी बात सुनकर हैरान थी और विश्वास नहीं कर रही थी। शराब के नशे में होने के कारण पुलिस ने उसकी बात को अनसुना कर दिया।

जस्टिस यशवंत वर्मा का स्थानांतरण इलाहाबाद हाईकोर्ट करने पर भड़का बीसीए कहा- हम कूड़ा घर नहीं

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
प्रयागराज। दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश यशवंत वर्मा का तबादला इलाहाबाद हाईकोर्ट किए जाने के सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम के फैसले पर इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन ने कड़ी नाराजगी जाहिर की है। जस्टिस वर्मा के घर कथित तौर पर करोड़ों रुपये मिले हैं। इसके बाद उनका तबादला इलाहाबाद किया गया है। हाईकोर्ट बार ने कोलेजियम के फैसले पर हैरानी जताई है। इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन ने दिल्ली हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा का स्थानांतरण इलाहाबाद हाईकोर्ट किए जाने पर कड़ी नाराजगी जाहिर की है। बार एसोसिएशन ने पत्र जारी कर कहा है कि हम कूड़ा घर नहीं हैं। बार ने कहा कि समाचार पत्रों के माध्यम से पता चला है कि दिल्ली में न्यायमूर्ति के घर में लगी आग को बुझाने के दौरान लगभग 15 करोड़ रुपए मिले हैं। सुप्रीम कोर्ट ने मामले का संज्ञान लेते हुए न्यायमूर्ति का स्थानांतरण इलाहाबाद हाईकोर्ट कर दिया है। हाईकोर्ट बार ने पत्र जारी कर इसका कड़ा विरोध किया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन ने दिल्ली के न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के घर से कथित रूप से नगदी मिलने पर उनका स्थानांतरण इलाहाबाद हाईकोर्ट किए जाने पर कड़ा विरोध जताया है। बार ने पत्र जारी कर कहा कि इलाहाबाद हाईकोर्ट कोई कचरे का डिब्बा नहीं है और न ही भ्रष्टाचार का अड्डा है। जहां पर किसी भी भ्रष्टाचार में आरोपित न्यायमूर्ति का स्थानांतरण कर दिया जाए। हम भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं करेंगे और अंतिम सांस तक लड़ेंगे। बार अध्यक्ष अनिल तिवारी ने कहा कि कोलेजियम का यह निर्णय इलाहाबाद हाईकोर्ट को तोड़ने की मंशा को प्रदर्शित करता है। लेकिन बार एसो. ऐसा कदापि नहीं होने देगा। आम जनता का न्यायपालिका पर विश्वास बना रहे, इसके लिए 24 मार्च को आकस्मिक आम सभा लाइब्रेरी हाल में आयोजित की गई है। सर्वसम्मति से उचित फैसला लिया जाएगा। आगे कहा कि इलाहाबाद हाईकोर्ट विशेषकर जजों की कम संख्या की समस्या से जूझ रहा है। इससे नए मुकदमों पर कई महीने बीत जाने के बाद भी सुनवाई नहीं होती। इससे वादकारियों का न्यायपालिका पर विश्वास समाप्त हो रहा है और उनका हित प्रभावित हो रहा है।न्यायमूर्तिगणों की कमी है और लगातार समस्याओं के बावजूद पिछले कई सालों से नए जजों की नियुक्ति नहीं हुई है। यह भी चिंता का विषय है कि बार के सदस्यों को पदोन्नत करके न्यायाधीशों की नियुक्ति करते समय बार से कभी भी परामर्श नहीं किया गया। पात्रता पर विचार मानक के अनुरूप नहीं किया जा रहा है। इस वजह से भ्रष्टाचार हुआ है। इसका परिणाम यह है कि न्यायपालिका में जनता के विश्वास को बहुत नुकसान पहुंचा है।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

नशे में धुत होकर दबंगों ने बस्ती पर किए हमला सौंपा पत्र

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। संत कबीर नगर के करीं गांव (थाना क्षेत्र महुली) में होली के (14 मार्च 2025 को) हुई घटना निंदनीय व बेहद चिंताजनक है। नशे करने की साजिश है, जिस पर 21 गरीब राजभर परिवार दशकों से रहते आ रहे हैं इतनी बड़ी घटना के बाद भी जिला प्रशासन की ओर से अभी तक कोई राहत सामग्री, खाद्यान्न, कागज दिया जाए। 3. प्रत्येक परिवार को पांच-पांच लाख रुपये मुआवजा दिया जाए। 4. घायलों का निःशुल्क इलाज कराया जाए। 5. पीड़ितों की सुरक्षा व्यवस्था की जाए।6. सभी

में धुत होकर सामंती दबंगों ने गरीब राजभर लोगों की बस्ती पर हमला किया, लाठी-डंडों से बुरी तरह महिलाओं, पुरुषों व बच्चों की पिटाई की और 21 घरों को आग लगाकर पूरी तरह जला दिया। हमले में घायल दो व्यक्ति गोरखपुर मेडिकल कालेज में मौत से जूझ रहे हैं। 21 परिवारों की जीवन भर की कमाई स्वाहा हो गई। उनके सर पर न छत बची है, न खाने को अन्न का दाना। हमारी पार्टी की एक टीम ने घटनास्थल पर जाकर पीड़ित परिवारों से भेंट की है और तथ्यों को जाना है। घटना के पीछे डीजे बजाने का विवाद तो महज एक बहाना है। असल बात हमला करने वाले गांव के दबंग भूमिहार जाति के लोगों द्वारा उस जमीन पर कब्जा कपड़ा व दवा-इलाज के लिए पैसा पीड़ितों को नहीं दिया गया है। डीएम, एसपी हाल तक जानने नहीं गए। न ही सभी हमलावर गिरफ्तार किए गए हैं। महिलाओं को अभी भी दोबारा हमले की आशंका है। उन्हें धमकियां मिल रही हैं। पीड़ित परिवार दहशत में हैं। इस घटना के खिलाफ भाकपा (माले) आज पूरे प्रदेश में विरोध दिवस मना रही है। यह घटना सरकार की नाकामी है। मौजूदा शासन में दबंगों का मनोबल बढ़ा है। वे गरीबों पर हमले कर रहे हैं। हमारी मांगें, जो पीड़ितों की भी मांगें हैं, निम्नलिखित हैं : 1. तत्काल जले हुए घरों को प्रधानमंत्री आवास देकर बनवाया जाए। 2. उक्त जमीन पर बसे गरीब राजभर परिवारों को पट्टा देकर उसका हमलावरों को गिरफ्तार कर सख्त सजा दी जाए। 7. डीएम व एसपी को त्वरित कार्रवाई न करने व संवेदनहीनता के लिए दंडित किया जाए। 8. प्रत्येक परिवार को छह माह के लिए राशन, कपड़ा सहित जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुएं मुफ्त दी जाएं उम्मीद है, उपरोक्त मांगों को पूरा कर पीड़ित परिवारों से न्याय दिलाया जाएगा। भाकपा माले नेता शेख मोहम्मद कामरेड कलीम अंसारी ऑल इंडिया स्टूडेंट एसोसिएशन छात्र संगठन आइसा प्रदेश कमेटी सदस्य व सोनभद्र जिला प्रभारी शेख अमीना खातून उर्फ चारु महिला संगठन एपवा नेता शेख जुबेदा खातून कार्यालय सचिव राजदेव सिंह शंकर कोल पप्पू भारती ईश्वर दयाल और तमाम लोग मौजूद रहे।

मनरेगा कर्मचारियों का मानदेय न मिलने पर किया प्रदर्शन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। कलेक्ट्रेट परिसर में शुक्रवार को जनपद-सोनभद्र (उ0प्र0) (सम्बद्ध राज्य कर्मचारी महासंघ)ग्राम

रोजगार संघ जिलाध्यक्ष विनय कुमार पाण्डेय के नेतृत्व में समस्त मनरेगा कर्मचारी ने जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा और माँग किया गया कि मनरेगा कर्मचारियों का 6 माह से मानदेय बकाया चल रहा है। होली जैसे महापर्व पर भी मानदेय नहीं मिला। मानदेय न मिलने से कर्मचारी भुखमरी के कागार पर खड़े हैं और कर्ज लेकर जीवन यापन कर रहे हैं। उधर मजदूरों की मजदूरी 4 माह से बकाया चल रहा है जो काम करने से मना कर रहे हैं। मनरेगा कर्मचारियों का ईपीएफ 2017 से कट रहा है लेकिन अभी तक ईपीएफ का धनराशि पूर्ण यू0एन0 खाते में जमा नहीं किया गया जिससे हमारे साथ कोई दुर्घटना घट जाती है तो हमारे परिवार को लाभ से वंचित कर दिया जायेगा। विनय मिश्रा ने कहा अगर हमारे मानदेय का भुगतान जल्द नहीं कराया गया तो जनपद के समस्त कर्मचारी कलम बन्द हड़ताल करने को बाध्य होंगे, जिसकी समस्त जिम्मेदारी शासन-प्रशासन की होगी।इस दौरान विनय मिश्रा, विमलेश कुमार, पंकज कुमार, वेद प्रकाश, प्रदीप सिंह राणा, सुनील सिंह,, संतोष, मेराज, अशोक, संजय, बाबूलाल, दिवाकर, विनीता पटेल, धर्मवीर विजय सचिन ठगार, रामनवन आदि लोग मौजूद रहे।

बालिका संवर्ग में 100 मीटर दौड़ में कुमारी पूजा रही प्रथम

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। पीएम श्री विद्यालयों के बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक समारोह का प्रथम जनपदीय आयोजन जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान प्रांगण में किया गया। कार्यक्रम का

शुभारंभ उप शिक्षा निदेशक / जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी मुकुल आनंद पांडे एवं खंड शिक्षा अधिकारी चतरा अरविंदकुमार एवं जिला समन्वयक (प्रशिक्षण) जय किशोर वर्मा द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन से किया गया। तत् पश्चात अतिथियों द्वारा क्रीडा ध्वज के आरोहण व क्रीड़ा शपथ के द्वारा खेलकूद व सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं की शुरुआत कराई गई।समस्त आयोजनों के निर्णायक मंडल सदस्यो में खण्ड शिक्षा अधिकारियों धनंजय सिंह (रॉबर्ट्सगंज), अरविंद कुमार सिंह (चतरा), राकेश कुमार पांडे (करमा) की भूमिका महत्वपूर्ण रही। विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणामो में बालिका संवर्ग में 100 मीटर दौड़ में कुमारी पूजा ने प्रथम (कंपोजिट विद्यालय सरवट) एवं कुमारी चांदनी ने द्वितीय (कंपोजिट विद्यालय बहुअरा) स्थान प्राप्त किया। गोला प्रक्षेपण में कुमारी प्रतीक्षा ने प्रथम (कंपोजिट विद्यालय सरवट) , कुमारी अर्चना ने द्वितीय (कंपोजिट विद्यालय मगरदहा) लम्बी कूद में मनीषा (कंपोजिट विद्यालय सरवट) ने प्रथम कुमारी खुशबू (कंपोजिट विद्यालय पलहारी) ने द्वितीय एवं पोस्टर प्रतियोगिता में कुमारी इच्छा ने प्रथम (कंपोजिट विद्यालय घोरावल) कुमारी अंजली ने (कंपोजिट विद्यालय हिनौता) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।इसी प्रकार लोकगीत प्रतियोगिता में कंपोजिट विद्यालय मगरदहा ने प्रथम एवं कंपोजिट विद्यालय हिनौता ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बालक संवर्ग की 100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में मनोज कुमार (कंपोजिट विद्यालय जड़ेरुआ)ने प्रथम अंशु कुमार (कंपोजिट विद्यालय घोरावल) ने द्वितीय स्थान गोला प्रक्षेपण में मनोज कुमार (कंपोजिट विद्यालय जड़ेरुआ)ने प्रथम विराट कुमार (कंपोजिट विद्यालय हिनौता) ने द्वितीय लंबी कूद प्रतियोगिता में शिवम कुमार (कंपोजिट विद्यालय हिनौता) ने प्रथम एवं आशीष कुमार (कंपोजिट विद्यालय सरवट)ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। साथ ही पोस्टर प्रतियोगिता में रवि किशन (कंपोजिट विद्यालय घोरावल) ने प्रथम एवं मोहम्मद अयान (कंपोजिट विद्यालय हिनौता) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सभी विजेता प्रतिभागियों को अतिथि गणों द्वारा प्रमाण पत्र व पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया। इस विशिष्ट आयोजन में एसआरजी विनोद कुमार, जिला प्रशिक्षण आयुक्त (स्काउट) सैय्यद अनवर हुसैन , नंदकिशोर (ब्लॉक स्काउट शिक्षक रॉबर्ट्सगंज) मदन लाल (ब्लॉक व्यायाम शिक्षक रॉबर्ट्सगंज), एआरपी हृदेश सिंह , केसर सिंह, संकुल शिक्षक जय प्रसाद चौरसिया , ज्ञानेश त्रिपाठी , उमा सिंह पटेल , वरुण त्रिपाठी के अतिरिक्त मंच संचालक आनंद प्रकाश त्रिपाठी सहित खेल शिक्षकों , अनुदेशकों व समस्त विकास खण्डों के प्रतिभागी बच्चों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

ग्रामीणों कलेक्ट पर विरोध प्रदर्शन कर बीडीओ का किया घेराव

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। कलेक्ट्रेट परिसर में शुक्रवार को सदर तहसील अंतर्गत ग्राम पंचायत कतवरिया में उचित दर विक्रेता में चयनित समूह डॉक्टर भीमराव अंबेडकर स्वयं सहायता समूह का चयन होने के उपरांत चयन कमेटी द्वारा संबंधित अभिलेख को छुपाते हुए तथा खंड विकास अधिकारी रावटसगंज द्वारा बिना जांच किया गलत आरोप लगाने के संबंध में ग्रामीण व समूह के लोगों द्वारा विरोध प्रदर्शन करते हुए जिलाधिकारी को पत्र देकर मामले की जांच करा कर दोषीयो के खिलाफ कार्रवाई की उठाई मांग। समूह की साखी व ग्रामीणों द्वारा सदर ब्लॉक पर पहुंचकर बीडीओ का घेराव कर लगाए नारे बाजी। समूह अध्यक्ष विमला देवी व सदस्य मेनका द्वारा बताया गया कि कि ग्राम पंचायत में रिक्त चल रहे उचित दर विक्रेता के दुकान का चयन हेतु कार्यालय खण्ड विकास अधिकारी रावट्सगंज बीते 13.01 के क्रम में अवगत कराया गया कि ग्राम पंचायत कतवरिया में रिक्त चल रहे उचित दर विक्रेता का चयन दिनांक 31.01. को खुली बैठक आहूत कर किया जाना है। जिसमें चयन कमेटी गठित थी जिसका पत्र संलग्न है। जिसके उपरान्त ग्राम विकास अधिकारी राकेश द्विवेदी द्वारा सभी कार्यवाही पूर्ण करते हुए और चयन सम्बन्धित शासनादेश को पढकर सुनाते हुए नियमानुसार पात्र समुह डा0 भीमराव अम्बेडर स्वयं सहायता समुह ग्राम पंचायत कतवरिया का चयन किया गया, जो खुली बैठक में अवगत हो कि उक्त चयन सम्बन्धित कार्यवाही की पूरी विडियो रिकार्डिंग समुह के पास प्रमाण है जिसमें अवगत कराना है कि उक्त चयन कमेटी द्वारा गया है। महोदय उक्त चयन सम्बन्धित प्रक्रिया कि पूरी विडियो रिकार्डिंग है जिसमे डा0 भीमराव अम्बेडकर स्वयं सहायता समूह का घोषणा किया गया

घोषणा की गयी। जिसके उपरान्त समुह को कोई चयन सम्बन्धी पावती पत्र नहीं दिया गया, जो कार्यवाही पूर्ण की गयी उसकी भी कापी चयन कमेटी द्वारा उक्त चयन समुह को नहीं दिया गया। परन्तु महोदय सादर चयन सम्बन्धित कार्यवाही रजिस्टर व फोटोग्राफ छुपाया जा रहा है, जिससे साक्ष्य को मिटाते हुए खण्ड विकास अधिकारी रावट्सगंज द्वारा गलत आरोप लगाया जा रहा है कि किसी समुह का चयन नहीं किया है। परन्तु खण्ड विकास अधिकारी द्वारा सीधे साक्ष्य को मिटाते हुए उक्त चयन को निरस्त कर पुनः चयन करने जैसे घोर लापरवाही का प्रयास किया जा रहा है जो सरासर अन्याय है। उक्त मामले का तत्काल जाँच कराया जाय। महोदय अवगत हो कि इसके पूर्व में अपर मुख्य सचिव ग्राम विकास उत्तर प्रदेश शासन के पत्र 26.10.2020 का संदर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें, जिसकी कापी संलग्न है, जिसमें यह स्पष्ट है कि ऐसे नये स्वयं सहायता समुह अगर राशन की दुकान के आंवटन के लिए आवेदन करते है तो सम्बन्धित जिले के जिलाधिकारी का पूर्व उन्मोदन आवश्यक होगा। जो उक्त खण्ड विकास अधिकारी महोदय व विभागीय उपायुक्त आजीविका मिशन द्वारा उक्त समुह का भी अन्मोदन कराया गया है। जिसमें समस्त परीक्षण कर पात्रता की सूची में शामिल किया गया है जिसका पत्र संलग्न है। अवगत हो कि उपायुक्त स्वतः रोजगार/मुख्य विकास अधिकारी/डी0एस0ओ0/जिला प्रबन्धक एन0आर0एल0एम0 के स्वीकृति पत्र द्वारा अन्मोदन कराया गया है। अवगत हो कि उक्त समुह का गठन 06.03. 2022 से चल रहा है। जो गठन के उपरान्त विभागीय सक्षम अधिकारी बी0एम0एम0 महेश कुमार द्वारा पत्र समूह का स्वीकृति करते हुए उक्त समुह में फण्ड भी जारी किया गया है। जो निम्न है इस मौके पर रीता देवी, सीमा, विद्यावती देवी, पूनम, आशा ,संगीता ,कमला, बसंती, उर्मिला, सावित्री ,उषा, सुजीत, पारस, बबलू सहित आज लोग मौजूद रहे।

क्षेत्राधिकारियों ने अपने- सर्किल में सुनी फरियादियों की समस्याएं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। जनपद के समस्त थानों पर ठथाना समाधान दिवसठ का आयोजन किया गया। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अशोक कुमार मीणा के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय कालू सिंह द्वारा थाना रॉबर्ट्सगंज पर तथा समस्त क्षेत्राधिकारियों द्वारा अपने-अपने सर्किल क्षेत्र पर आयोजित थाना समाधान दिवस के अवसर पर फरियादियों की समस्याओं को सुनकर उनके निस्तारण हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया गया। इसी क्रम में समस्त थाना प्रभारी द्वारा अपने-अपने थानों पर थाना समाधान दिवस के अवसर पर फरियादियों की समस्याओं को सुनकर कुछ का मौके पर निस्तारण किया गया तथा कुछ के गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध निस्तारण हेतु सम्बंधित को निर्देशित किया गया। इसी के साथ यह भी निर्देश दिया गया कि जमीन सम्बंधित सभी प्रकरणों में पुलिस व राजस्व की टीमों द्वारा संयुक्त रुप से प्रकरण का निस्तारण किया जाए, जिससे फरियादियों को अलग-अलग भटकना न पड़े व प्रकरणों का त्वरित व न्याय पूर्ण निस्तारण हो सके।

सेवा निवृत शिक्षक सम्मान होली मिलन मारोह हुआ संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के परिसर में राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ उत्तर प्रदेश सोनभद्र द्वारा पत्र देते हुए उनके द्वारा कृत कार्यों की सराहना की साथ ही उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु जीवन की कामना की । उन्होंने कार्यक्रम के दिनेश मिश्रा ने होली गीतों के साथ मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में आए हुए सभी अतिथियों का आभार जिला अध्यक्ष अशोक

होली मिलन एवं सेवा निवृत शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस वर्ष जनपद से कुल 29 शिक्षक ,1 परिचारक एवं 1 चालक सेवानिवृत हो रहे हैं। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी मुकुल आनंद पाण्डेय के द्वारा मां सरस्वती का पूजन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों का स्वागत जिला महामंत्री इंदु प्रकाश सिंह ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के मंडल अध्यक्ष अखिलेश वत्स ने किया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा सेवानिवृत्त हुए सभी शिक्षकों का माल्यार्पण कर अंगवस्त्रम एवं सम्मान आयोजनकर्ता राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ सोनभद्र के सभी पदाधिकारियों को बधाई दी एवं सराहना की। खंड शिक्षा अधिकारी म्योरपुर विश्वजीत कुमार, नगवां बृजेश कुमार सिंह, दुद्धी महेंद्र कुमार मौर्य, चतरा अरविंद कुमार पटेल, चोपन सुनील कुमार , डायट प्रवक्ता नीरज शर्मा, अरमा देवी, ऋचा ओझा, हीरालाल प्रजापति , अ॰ जयकिशोर वर्मा , ऐंउ विद्यासागर, न्झ् के विभाग संगठन मंत्री विवेक कुमार आदि ने सेवानिवृत शिक्षकों को संबोधित करते हुए होली मिलन समारोह में एक दूसरे को अबीर लगाकर होली की शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में शिक्षक शिक्षक दिनेश तिवारी, गोपाल राय, उपेंद्र मिश्रा, कुमार त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम का संचालन सह मीडिया प्रभारी आनंद देव पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष बृजेश कुमार सिंह, जिला उपाध्यक्ष मनीष त्रिपाठी, जिला मंत्री देवेंद्र गंगवार, कमलेश कुमार, अरुणेश चंद्र पाण्डेय, सौरभ कार्तिकेय , ब्लॉक अध्यक्ष नगवां दिलीप पाठक, बभनी शिव कुमार, महामंत्री अनिल गुप्ता, ब्लॉक अध्यक्ष चोपन नागेंद्र सिंह , महिला विंग की उपाध्यक्ष मालिनी मिश्रा, ममता देवी, विकास देव पाण्डेय, सौरभ पटेल, अरविंद पाण्डेय, गौतम यादव आदि शिक्षक एवं शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

गरीब नवाज रिलीफ फाउंडेशन द्वारा जरूरतमंद लोगों को रमजान राशन पैक का किया गया वितरण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
डाला सोनभद्र।गरीब नवाज रिलीफ फाउंडेशन(उँड्),दावतें इस्लामी इंडिया के वेलफेयर डिवीजन ने डाला में खजूर,मसाले और अन्य जरूरी सामान शामिल हैं।हाफीज नसीम खान ने आगे कहा कि गरीब नवाज रिलीफ फाउंडेशन उन सभी

शनिवार को अपने सामाजिक दायित्वों को निभाते हुए इस साल भी रमजान राशन पैक वितरण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया।संगठन के मंडल प्रभारी हाफीज नसीम खान ने बताया कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य समाज में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को रमजान के दौरान खाद्य सुरक्षा प्रदान करना है, ताकि वे अपनी इबादत और रोज़े को बिना किसी चिंता के पूरा कर सकें।इस कार्यक्रम के तहत लोगों को भूख और गरीबी से राहत दिलाने की दिशा में एक कदम है।प्रत्येक राशन किट में रोजमर्रा की आवश्यक खाद्य वस्तुएं जैसे चावल,आटा,दाल,चीनी,चाय, दानदाताओं,स्वयंसेवकों और सहयोगियों का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हैं तथा हमारी संस्था आगे भी ऐसे नेक कार्यों को जारी रखेगी। आप सभी से दुआ और सहयोग की गुजारिश है ताकि आने वाले समय में और भी ज्यादा जरूरतमंदों तक मदद पहुंचाई जा सके। इस मौके पर सद्दाम अत्तारी,नयाज अहमद,दिलकुम अंसारी, नसीम खान,जावेद,अनीस,नौशाद अहमद,दिलशेर खान,हासीम भाई,आकिब मिर्जा आदि लोग मौजूद रहे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं पुरा छात्र सम्मेलन सफलतापूर्वक संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र।राजकीय इंजीनियरिंग

कॉलेज, सोनभद्र में राष्ट्रीय संगोष्ठी और पुरा छात्र सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर तकनीकी, शैक्षिक और शोध से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। संगोष्ठी में देशभर से सैकड़ों शोध पत्र प्रेषित किए गए, जिससे प्रतिभागियों को ज्ञानवर्धक जानकारी प्राप्त हुई। संगोष्ठी के समन्वयक एवं विद्युत विभागाध्यक्ष डॉ. विजय प्रताप सिंह ने बताया कि यह कार्यक्रम विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को नए विचारों को साझा करने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है। संगोष्ठी में राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज मिर्जापुर के निदेशक प्रो. के. एस. वर्मा, आईआईआईटी इलाहाबाद के प्रो. विजेंदर सिंह, राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज बस्ती के निदेशक प्रो. कुलदीप सहाय, राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज मैनपुरी के निदेशक प्रो. दिपेंद्र सिंह सहित कई प्रतिष्ठित अतिथि व्याख्याताओं ने अपने विचार साझा किए। इस आयोजन को सफल बनाने में संस्थान के निदेशक प्रो. जी. एस. तोमर, कुलसचिव डॉ. आमोद कुमार तिवारी, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. डी. के. त्रिपाठी, अधिष्ठाता अकादमिक डॉ. हिमांशु कटियार का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी मीडिया सचिव डॉ. विकास तिवारी ने साझा की। इसके साथ ही, पुरा छात्र सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसमें उत्तर प्रदेश संस्कृति विभाग के कलाकारों ने शानदार सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। समन्वयक डॉ. पी. के. वर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम के माध्यम से कॉलेज के पूर्व छात्र-छात्राओं को पुनः एक मंच पर आकर अपने अनुभव साझा करने और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिला। इस सफल आयोजन से कॉलेज में उत्सव का माहौल बना रहा और छात्रों को शिक्षा व संस्कृति से जुड़े विभिन्न पहलुओं का अनुभव प्राप्त हुआ।

महिलाओं किशोरियों के लिए सरकारी योजनाओं पर जिला स्तरीय कार्यशाला

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। जन कल्याण ग्रामोद्योग सेवा आश्रम, सोनभद्र द्वारा संचालित परियोजना इम्पॉवर हर के अंतर्गत महिलाओं और किशोरियों के लिए सरकारी योजनाओं पर जिला स्तरीय एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन नगवा ब्लॉक सभागार में किया गया। इस कार्यशाला में नगवा ब्लॉक के 10 गांवों–देवरी मय देवरा, पियरी, बिछिया, गोटीबांध, डोमरिया, सिकरवार, शाड़सोते, शिकारपुर, सरईगढ़ व पिपराडीह–से कुल 50 महिलाओं और किशोरियों ने प्रतिभाग किया। कार्यशाला में महिलाओं और

किशोरियों को विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दी गई, जिससे वे इनका लाभ उठा सकें और योजना का आवेदन स्वयं कर आत्मनिर्भर बन सकें। उपस्थित विशेषज्ञों ने सरकारी योजनाओं की प्रक्रिया, आवेदन प्रक्रिया और उनके लाभों के बारे में विस्तार से बताया। इस अवसर पर परियोजना क्षेत्र की कार्यकर्ता पूनम, सुनीता, सुमन, नीलम, रीमा, जसवंत, प्रोग्राम मैनेजर कुतुबुद्दीन एवं ब्लॉक समन्वयक विजय कुमार प्रजापति, ऐंध् से अंजनी व संजय सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

विविध

मेरा देश भारत

स्वर्गीय पत्रकार ठाकुर प्रमोद सिंह की याद में हुआ शोकसभा का आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। मीडिया क्लब में शोकसभा का आयोजन किया गया, आपको बता दें कि बीते 14 मार्च को हार्ट अटैक की वजह से पत्रकार ठाकुर प्रमोद सिंह का देहांत हो गया था,जिनकी याद में नोएडा मीडिया क्लब में आज शोक सभा का आयोजन किया गया, मूल रूप से बुलंदशहर के रहने वाले ठाकुर प्रमोद सिंह करीब 15 सालों से नोएडा और आसपास के क्षेत्र में पत्रकारिता कर रहे थे,वह कनक टाइम्स और गगन मंच समेत कई समाचार पत्र पत्रिकाओं में काम कर चुके हैं, सेक्टर 29 स्थित गंगा शॉपिंग कांप्लेक्स में मौजूद नोएडा मीडिया क्लब में आज दिवंगत पत्रकार के परिजनों और क्लब के सदस्यों द्वारा उनके चित्र पर पुष्प अर्जित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई,साथ ही 2 मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना भी की गई,इस मौके पर उनकी पुत्री चेतना , पुत्र युवराज और लवेश समेत उनके अन्य परिजन मौजूद रहे साथ ही आर बी सिंह यादव, जेपी सिंह,हिमांशु शुक्ला, एसके सिंह, हरिशंकर, गिरीश नारायण, तृप्ति श्रीवास्तव, आनंद, रमेश शर्मा और चंद्र प्रकाश आदि पत्रकार साथी मौजूद रहे।

लीगल एड क्लीनिक का किया गया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
रायबरेली।30प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के एक्शन प्लान के अनुक्रम में व माननीय अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण/जनपद न्यायाधीश, रायबरेली श्री राजकुमार सिंह के दिशा-निर्देशन में तहसील महराजगंज के अन्तर्गत स्थित लीगल एड क्लीनिक कुण्डौली रायबरेली का निरीक्षण अपर जिला जज/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अनुपम शौर्य के द्वारा किया गया। निरीक्षण के दौरान वरिष्ठ परावैधिक स्वयं सेवक बृजपाल से लीगल एड क्लीनिक के कार्यो के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी ली गयी। अपर जिला जज/सचिव द्वारा सुनील कुमार उप निरीक्षक बछरावाँ को निर्देशित किया गया कि वह लीगल एड क्लीनिक को उनके कार्यो के प्रति सहयोग प्रदान करें। इसके अतिरिक्त दिये गये प्रार्थनापत्रों पर की गयी कार्यवाही की सूचना परावैधिक स्वयं सेवक को प्रेषित करना सुनिश्चित करें। उक्त प्रार्थनापत्रों पर की गयी कार्यवाही के सम्बन्ध में प्रार्थीगण को अवगत कराया जा सके। निरीक्षण के दौरान सचिव के द्वारा उपस्थित परावैधिक स्वयं सेवकों को समर्पण की भावना से कार्य करने हेतु उत्साहवर्धन कर उनको आमजन को सरकारी सेवाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करने व उनका लाभ दिलाये जाने के निर्देश दिये गये। दौरान निरीक्षण परावैधिक स्वयं सेवक जालिपा प्रसाद व कु0 दीक्षा उपस्थित रही।

प्लास्टिक मुक्त बनाने को ग्राम प्रधान प्रतिदिन एक घंटा खुद ई रिक्शा से इकट्ठा कर रहे प्लास्टिक

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। सोनभद्र को प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए हर व्यक्ति को अपने स्तर से कुछ न कुछ महत्वपूर्ण प्रयास शुरू करना होगा। प्लास्टिक यूज करने के बाद घर पर एक बोरी लगा कर रखना भी एक सहयोग होगा। इसकी शुरुआत कर दी। ग्राम प्रधान ने ठाना की लोगों को जागरूक करने के लिए प्रतिदिन सुबह 7:00 बजे से 8:00 बजे तक स्वयं ई रिक्शा लेकर खुद घरों से प्लास्टिक कलेक्ट करने के लिए निकल पड़ते हैं ग्राम प्रधान परमेश्वर पाल ने बताया कि जब

जिसमें आज विकास खंड घोरावल के एक छोटे से ग्राम पंचायत रघुनाथपुर के ग्राम प्रधान परमेश्वर पाल ने ठाना की जिलाधिकारी और मुख्य विकास अधिकारी के पहल को देखते हुए अपने ग्राम पंचायत को प्लास्टिक मुक्त बनाना है, तभी जनपद प्लास्टिक मुक्त हो पाएगा 2676 आबादी के इस गांव में 580 घर हैं ग्राम प्रधान ने सदस्यों एवं गांव के गणमान्य लोगों के साथ बैठक कर 300 से अधिक घरों में प्लास्टिक कलेक्ट करने के लिए बोरी लगाकर सीडीओ ने विकास भवन में प्लास्टिक के लिए अभियान चलाया तो मैं भी वहां था इससे प्रेरित हो कर मैने भी ठाना की अब ग्राम पंचायत को प्लास्टिक मुक्त बनाएंगे। प्रधान खुद प्रतिदिन लोगों को जागरूक करने के लिए ई रिक्शा चलाते हैं तथा सफाई कर्मी बोरियों से प्लास्टिक निकालकर ई रिक्शा में कलेक्ट करते हैं। घर तथा गांव के लोगों ने भी सहयोग करना अब शुरू कर दिया है। अपने बोरियों में से प्लास्टिक निकलकर वह ई-रिक्शा में रखना शुरू कर दिए हैं। ग्राम प्रधान ने प्लास्टिक एवं अन्य कचरे को बेचकर 1800 रुपए का आय जनरेट किया है। इकट्ठा किए गए प्लास्टिक को आरआरसी पर लाकर सफाई कर्मियों के द्वारा अलग-अलग छांटकर इकट्ठा किया जा रहा है। अभी 100 किलो से अधिक प्लास्टिक आर आर सी पर इकट्ठा कर लिया गया है, जिसमें बिकने वाला प्लास्टिक होगा उसको कबाड़ी को बेचकर ग्राम पंचायत का आय बढ़ाया जाएगा तथा जो सिंगल यूज प्लास्टिक होगा उसको निस्तारण के लिए आगे भेज दिया जाएगा। ग्राम प्रधान द्वारा यह अनूठी पहल जनपद के सभी ग्राम प्रधान एवं लोगों को जागरूक करने का एक प्रयास है कि अगर हमको अपने जिले को प्लास्टिक मुक्त बनाना है तो सभी को एक छोटा सा प्रयास शुरू करना होगा। जिलाधिकारी और मुख्य विकास अधिकारी महोदया और जिला पंचायत राज अधिकारी के लिए गए संकल्प कि हम जनपद को प्लास्टिक फ्री बनाएंगे उसमें ग्राम पंचायत का एक छोटा सा योगदान है। ग्राम प्रधान परमेश्वर पाल और सचिव शंकर यादव ने बताया कि हम अपने गांव को प्लास्टिक फ्री बनाने की दिशा में बढ़ रहे हैं गांव के सभी लोगों का सहयोग मिल रहा है कुछ लोगों द्वारा बोरिया लगाकर हटा दी जा रही हैं लेकिन उनको बार-बार समझाया जा रहा है कि हमको प्लास्टिक बाहर नहीं फेंकना है और उसके प्रयोग के बाद हमको इस में बोरी में ही रखना है। बोरी से प्लास्टिक कलेक्ट करने का कार्य ग्राम पंचायत का है जो अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार है। गांव में मुख्य रूप से अशोक, दिनेश सैंडल शिवकुमार, अजय सिंह, गुलाब सिंह, रामसेवक, दुलारे एवं अरविंद ने इस अभियान में लोगों को जागरूक करने के लिए सहयोग कर रहे है।

चैत्र नवरात्र और मेले को लेकर पीस कमेटी बैठक संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। शक्तिनगर स्थित शक्तिपीठ मां ज्वालामुखी प्रांगण में शुक्रवार को चैत्र नवरात्र और लगने वाले 15 दिनों के मेले को लेकर पीस कमेटी बैठक होने वाले चैत्र नवरात्र की पूजा व परिसर में लगने वाले मेले के बारे में आने वाली समस्याएं पर विस्तृत चर्चा की। मंदिर के पुजारी श्लोकी मिश्रा,चिल्काडांड प्रधान हीरालाल,

संपन्न हुआ। थाने में चुनाव कराकर सर्व सहमति से अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी आशीष चौबे को दी गई। उपाध्यक्ष जयप्रकाश, सचिव संतोष सागर, वही कोषाध्यक्ष का दायित्व परशुराम गुप्ता कों मिला ।कुल 23 लोगों ने अध्यक्ष व समिति कें सदस्य कें लिए दावेदारी की थी। जिसमें आशीष चौबे को 11 मत, जयप्रकाश को पांच, संतोष सागर व परशुराम गुप्ता को तीन-तीन मत मिला।इससे पूर्व पीस कमेटी की बैठक के अध्यक्षता कर रहे उप जिलाधिकारी दुद्धि निखिल यादव, क्षेत्राधिकारी पिपरी अमित कुमार ने आगामी 30 मार्च से शुरू कोटा प्रधान प्रमोद तिवारी, हेमंत मिश्रा के अलावा मुकेश सिंह व अन्य लोगों ने बैरिकेटिंग, पार्किंग व्यवस्था,साफ सफाई,मोबाइल शौचालय, पेयजल, लाइट व्यवस्था के बारे में विस्तृत रूप से अवगत कराया।पूर्व की भांति मंदिर परिसर में लगने वाले 15 दोनों मिले के लिए कोई भी नीलामी नहीं कराई गई। दुकानदार मेले में निःशुल्क दुकान लगा सकेंगे। इसके लिए मंदिर समिति की टीम से भेंट कर अन्य कार्रवाई की जाएगी।इससे पूर्व भी हाई कोर्ट के आदेश के बाद मेला नीलामी पर रोक लगाई दी गई थी।इस मौके पर सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

सेक्टर 82 में 6 अप्रैल से श्री राम कथा का आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। जनता फ्लैट पॉकेट 7 सेक्टर 82 में एक बैठक का आयोजन किया गया । जिसका संचालन समाज सेवी रवि राघव ने किया। जिसमें श्रीराम कथा के आयोजन के लिए विचार विमर्श किया गया, बैठक में प्रस्ताव पारित किया गया कि आगामी 6 अप्रैल से 14 अप्रैल तक श्री राम कथा का

भव्य आयोजन किया जाएगा।कथा व्यास अनंत विभूषित महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी पंचमानंद जी महाराज (श्री पंचायती महा निर्वाणी अखाड़ा) के मुखार विंद से संगीतमयी कथा कही जायेगी। 6 अप्रैल दिन रविवार को सुबह 9 बजे से कलशयात्रा निकाली जाएगी। कलशयात्रा में बैंड बाजा, ऊंट, घोडा आदि रहेंगे। और जगह जगह पर कलशयात्रियो के लिए जलपान की व्यवस्था सोसायटी के भक्तों द्वारा किया गया है। और 15 अप्रैल को सुबह 7 बजे हवन आरती होगी तत्पश्चात 11 बजे से विशाल भंडारे का आयोजन समस्त पॉकेटवासियों के सहयोग से किया जायेगा। ? इस सोसायटी में हर वर्ष श्री राम कथा का आयोजन किया जाता है।कथा व्यास श्री निखिल धाम गैपरा जौरा जिला मुरैना के पीठाधीश्वर हैं । बैठक में रवि राघव, देवमणि शुक्ल, संजय पांडे, गोरे लाल, हरी शंकर सिंह, अंगद सिंह तोमर, रमेश वर्मा, रमेश चन्द्र दास, अनूप सिंह, संगम प्रसाद मिश्र, सर्वेश तिवारी, विकाश शर्मा, अवनीश तिवारी, दिनेश पाठक, अनिल शर्मा, विवेक, आयुष, राकेश ,अभिषेक, आदि पॉकेट के गण मान्य लोग मौजूद रहे।

डीएम ने निपुण विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों किया सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
रायबरेली। परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत क्लॉस 1 और 2 के बच्चों को पढ़ाई में निपुण बनाने वाले प्रधानाध्यापक और शिक्षकों का सम्मान जिला बेसिक शिक्षा विभाग की तरफ से निपुण भारत मिशन के तहत एक विशेष कार्यक्रम गोपाल सरस्वती इंटर कॉलेज सभागार रतापुर में निपुण सम्मान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि जिलाधिकारी हर्षिता माथुर और विशिष्ट अतिथि मुख्य विकास अधिकारी अर्पित उपाध्याय रहे। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी शिवेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि निपुण भारत अभियान के तहत जनपद के 800 विद्यालयों में दो चरणों में निपुण टेस्ट डायट में अध्ययनरत प्रशिक्षुओं ने किया था। पहले चरण में दिसंबर 2024 और दूसरे चरण में फरवरी 2025 के दौरान डीएलएड प्रशिक्षुओं द्वारा चिह्नित निपुण विद्यालयों में टेस्ट बच्चों का किया गया था। इस अभियान के तहत जिले के कुल 800 विद्यालयों में से 624 विद्यालयों ने निपुण परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। परिषदीय विद्यालयों के कक्षा एक व दो के बच्चों का फरवरी में निपुण आंकलन किया गया। इसमें बच्चों की भाषाई दक्षता, जोड़कर पढ़ने व अंकों की पहचान का मूल्यांकन हुआ था। इस उपलब्धि में स्कूल के अध्यापकों, एसआरपी और छात्रों की मेहनत का योगदान रहा। जिले में उत्कर्ष करने वाले विकासखंड बछरावां, ऊंचाहार और राही के खंड शिक्षा अधिकारियों को भी सम्मानित किया गया। प्राथमिक विद्यालय जमुनिया राही के बच्चों ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। राही ब्लॉक के प्राथमिक विद्यालय राजापुर की क्लॉस दो की छात्रा जाह्नवी और जमुनिया के सोनू का निपुण टेस्ट जिलाधिकारी के सामने किया गया।

भविष्य में और बेहतर परिणामों के लिए एक विशेष प्रेजेंटेशन भी दी गई। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागी बच्चों को पुरस्कृत किया गया। इसके अलावा प्रधानाध्यापकों को विभाग की तरफ से प्रमाणपत्र भी उपलब्ध कराया गया। कार्यक्रम में उप शिक्षा निदेशक डायट जय प्रताप सिंह, बीईओ बृजलाल, सत्य प्रकाश यादव, विजय सिंह, सत्य प्रकाश सिंह, ऋचा सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

बांग्लादेश आजाद कराने में पारितोष के रूप में मिली जमीन पर दबंगों का कब्जा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
झाँसी। भारत पाकिस्तान के बीच 1971 में हुए युद्ध में बांग्लादेश को आजाद कराने पर सरकार से मिली जमीन पर कब्जा हो गया। इस कब्जे को मुक्त कराने के लिए फौजी ओर उसका परिवार न्यायालय ओर प्रशासन के पास लगातार चक्कर काट रहा है। रक्सा में आयोजित समाधान दिवस में फौजी ओर उसका परिवार पहुंचा जहां उसने फौजी विजय वीर सिंह, नई दिल्ली के कृष्ण नगर निवासी मंजू शर्मा, सूर्यवीर शर्मा आदि ने बीते दिनों एसएसपी को शिकायती पत्र देते हुए बताया था कि उनके पिता और ताऊ ने फौज में रहकर सन 1971 में हुए भारत पाकिस्तान युद्ध में बांग्लादेश को आजाद कराया था।

इस पर सरकार ने उन्हें उपहार स्वरूप झांसी के रक्सा थाना क्षेत्र स्थित ग्राम बचौनी में पंद्रह एकड़ जमीन दी थी। इस जमीन पर कुछ दबंगों द्वारा फर्जी कूट रचित दस्तावेज तैयार कर कब्जा कर लिया। जिसकी रिपोर्ट दर्ज हो चुकी और आरोपी भी जेल जा चुके हैं। साथ ही जमीन को लेकर खसरा खतौनी में उनके नाम भी चढ़ गए। उन्होंने बताया कि न्यायालय के आदेश पर नाम चढ़ने के बाद भी उन्हें कब्जा नहीं मिल रहा। एसएसपी के आदेश पर आज दोनों पक्ष को रक्सा थाना में आयोजित समाधान दिवस में बुलाया था। समाधान दिवस में पुलिस ओर लेखपाल ने उनकी समस्या सुनने के बाद यह बताया कि मामला न्यायालय में विचाराधीन है। वही फौजी ने गुहार लगाते हुए कहा कि साहब मैं देश की रक्षा करूं या फिर अपनी जमीन रखाऊँ। फौजी ओर उसके परिवार ने न्याय की मांग करते हुए जमीन कब्जा दिलाने की गुहार लगाई है।

पत्रकार विनीत द्विवेदी को कुलपति के द्वारा पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए सम्मान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में शुक्रवार को साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी के विकास में भोजपुरी, अवधी, ब्रज एवं बुंदेलखंडी भाषा के योगदान पर दो दिवसीय

राष्ट्रीय सेमिनार के समापन सत्र में मुख्य अतिथि बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर मुन्ना तिवारी ने कहा कि हिंदी की स्वायत्तता, स्वतंत्रता एवं अस्मिता बचाने में बुंदेलखंडी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि हिंदी मुख्यतः बोलियों का समुच्चय है। हर भाषा की अपनी पहचान एवं अस्मिता होती है। उनका संरक्षण किया जाना चाहिए। तत्पश्चात कार्यक्रम की समाप्ति के बाद पत्रकार विनीत कुमार द्विवेदी ब्यूरो चीफ़ निपुण भारत समाचार ब्यूरो प्रयागराज व कैमरा पर्सन कमल कुमार मिश्रा को पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति आचार्य सत्यकाम के द्वारा अंग वस्त्र व स्मृति चंद के तौर पर हिंदी के विकास में अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा और बुंदेलखंडी का योगदान विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी मैं सहभागिता के लिए सम्मानित कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की और कहा कि विनीत द्विवेदी ने जनपद प्रयागराज में पत्रकारिता को लेकर अपनी एक अलग छाप बनाई है व निर्भीक होकर निष्पक्ष पत्रकारिता करते हैं। समापन सत्र में अतिथियों का स्वागत डॉ आनंदानंद त्रिपाठी ने तथा दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार की रिपोर्ट अनुपम ने प्रस्तुत की। संचालन डॉ त्रिविक्रम तिवारी एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी ने किया। इससे पूर्व हिंदी के विकास में ब्रजभाषा का योगदान एवं बुंदेलखंडी का योगदान विषयक दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। जिसमें प्रमुख रूप से प्रोफेसर रामपाल गंगवार, प्रोफेसर हरिदत्त शर्मा, प्रोफेसर राजनाथ सिंह, प्रोफेसर मुन्ना तिवारी तथा डॉ बहादुर सिंह परमार ने विशिष्ट व्याख्यान दिया।

इनरव्हील क्लब ने मनाया गणगौर व होली मिलन कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
रायबरेली। स्थानीय होटल विक्टोरिया में इनरव्हील क्लब ने होली व गणगौर धूमधाम से मनाया । कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन व गणेश वंदना कर किया गया। बच्चों द्वारा रंगारंग प्रस्तुतियां दी गई एवं कार्यक्रम अधिकारी उपासना जैन , आशी जैन व अर्चना सिकरिया द्वारा गणगौर पर विशेष प्रस्तुति दी गई। जिसे सभी ने सराहा। 4 गेम हुए जिसमें रीना गुप्ता, कीर्तिदा अग्रवाल, लक्ष्मी व शिल्पी प्रथम तथा आशा सिंह, प्रियंका अग्रवाल, संगीता, नीरज गुप्ता व प्रीति गुप्ता द्वितीय रहीं। वहीं समय से पहुंचने का पुरस्कार मीनू अग्रवाल, लकी पर्सन सरिता अग्रवाल, व गणगौर परिधान का पुरस्कार स्वाती अग्रवाल को मिला त् हाउजी भी खेली गई। जिसमें सभी को पुरस्कार मिला। कार्यक्रम के उपरांत भोजन की भी व्यवस्था थी।

कार्यक्रम में अध्यक्षा दीप्ति सिकरिया,पी.डी.सी. ज्ञान लता गुप्ता, निधि मेहरोत्रा, कंचन श्रीवास्तव, अनामिका मेहरोत्रा, अल्का द्विवेदी, मंजू सिंह, अल्पना पीयूष, अनुराधा गुप्ता आदि सदस्य उपस्थित थे । अर्चना जी ने आए सभी लोगों को धन्यवाद दिया।

वाईएसएस फाउंडेशन ने किया विश्व जल दिवस पर नदी स्वच्छता एवं जागरूकता अभियान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा।नोएडा विश्व जल दिवस के अवसर पर वाईएसएस फाउंडेशन द्वारा सेक्टर 94, नोएडा छठ घाट पर भव्य नदी स्वच्छता, सुरक्षा एवं जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान में सैकड़ों युवाओं, कार्यकर्ताओं और पर्यावरण प्रेमियों ने भाग लिया और जल संरक्षण का संदेश दिया। इस स्वच्छता अभियान के तहत घाट पर फैले प्लास्टिक और अन्य कचरे को एकत्रित कर नोएडा प्राधिकरण के सहयोग से उसके उचित निस्तारण की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर जिला अधिकारी मनीष कुमार वर्मा के निर्देशन में संस्था ने जनमानस से जल संरक्षण की अपील की और जल की महत्ता पर जोर दिया। नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा (नमामि) के सहयोग से आयोजित इस अभियान में कॉरपोरेट वालंटियर्स, स्थानीय नागरिकों और समाजसेवियों ने भी सक्रिय भागीदारी की। नोएडा ऑथोरिटी स्वास्थ विभाग से इंदु प्रकाश जी ने कहा की वाईएसएस फाउंडेशन, अब तक 200 से अधिक स्वच्छता एवं जागरूकता अभियान चला चुका है, जिसमें युवा शक्ति संस्था के सदस्य, कार्यकर्ता और समाज के विभिन्न वर्गों के लोग जुड़कर पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे रहे हैं। इस अवसर पर वाईएसएस फाउंडेशन के संस्थापक एवं निदेशक सचिन गुप्ता ने कहा ठजल संरक्षण केवल एक दिन का कार्य नहीं, बल्कि सतत प्रयास की आवश्यकता है। हमारी नदियाँ हमारा जीवन हैं, और हमें मिलकर इन्हें स्वच्छ एवं संरक्षित रखना होगा।इस मौके पर उपस्थित युवाओं और कार्यकर्ताओं ने ठजल है तो कल है, ठस्वच्छ यमुना मिशन स्वच्छ नदी, सुरक्षित भविष्यठ जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से जल संरक्षण और स्वच्छता का संदेश दिया। संस्था द्वारा इस अभियान को निरंतर कई वर्षों से जारी रखने की योजना है, जिससे समाज में जल और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक जागरूकता लाई जा सके।

सम्पादकीय

बढ़ रहा भारत का अंतरराष्ट्रीय कद, मोदी सरकार की विभिन्न नीतियों ने देश को नई दिशा दी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सशक्त नेतृत्व में भारत न केवल विकास की नई परिभाषाएं गढ़ रहा है, बल्कि वैश्विक मंच पर भी एक शक्ति के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। मोदी सरकार की निर्णायक नीतियां, प्रगतिशील दृष्टिकोण और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने वाली कार्यशैली ने भारत को उन्नति की ओर अग्रसर कर दिया है, जो विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने से पहले रुकने वाला नहीं है। हाल में संपन्न दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की ऐतिहासिक जीत, जनकल्याणकारी केंद्रीय बजट, मध्यवर्ग के लिए कर राहत, फ्रांस में आयोजित एआइ सम्मेलन में भारत की प्रभावशाली भागीदारी, मोदी का अमेरिका दौरा और यूरोपीय संघ (ईयू) के दृष्टिकोण में भारत का बढ़ता महत्व देश के प्रभुत्व में हुई वृद्धि को प्रमाणित करता है। आज दुनिया के कई हिस्सों में फैली अशांति और युद्ध की स्थिति में भारत हमेशा से शांति के पक्ष में दिखाई दिया है। प्रधानमंत्री मोदी का दृष्टिकोण है कि दुनिया का भविष्य और साइबर सुरक्षा साझेदारी को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए सहमति बनी। उसके बाद प्रधानमंत्री मोदी की हुई अमेरिका यात्रा केवल एक द्विपक्षीय बैठक नहीं थी, बल्कि भारत की कूटनीतिक शक्ति के विस्तार की दिशा में एक बड़ा कदम भी थी। उस यात्रा में अमेरिका की प्रमुख कंपनियों ने भारत में 50 अरब डालर के निवेश की घोषणा की। रक्षा क्षेत्र में भारत-अमेरिका साझेदारी को और मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर हुए इससे साफ होता है कि भारत-अमेरिका संबंध अब केवल व्यापार तक सीमित नहीं रहे, बल्कि वे रणनीतिक गठबंधन का रूप ले चुके हैं। यह गठबंधन हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिए भी महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान यूएस-इंडिया ट्रस्ट पहल की भी शुरुआत की घोषणा की गई यह रक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सेमीकंडक्टर, जैव प्रौद्योगिकी, ऊर्जा और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में अहम प्रौद्योगिकियों के प्रयोग

शांति और सहिष्णुता के सिद्धांतों पर आधारित होगा, तभी सभी देश मिलकर लोगों के कल्याण, सुरक्षा और समृद्धि के लिए कार्य कर सकेंगे। यही कारण है कि कई देशों के राष्ट्र प्रमुख भारत की ओर उम्मीद से देख रहे हैं। मोदी सरकार ने केंद्र और राजग शासित राज्यों में एक नई राजनीतिक संस्कृति को जन्म दिया है, जिसका मूलमंत्र सुशासन, पारदर्शिता, जवाबदेही और गरीब कल्याण है। उसने विकसित भारत, डिजिटल इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियानों के जरिये जनभागीदारी को प्राथमिकता दी है। दिल्ली चुनाव में भाजपा की सफलता इसका प्रमाण है कि जनता अब केवल मुफ्त योजनाओं पर निर्भर नहीं रहना चाहती, बल्कि ठोस विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा, आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसे मुद्दों के साथ विश्वसनीय नेतृत्व और परफार्मेंस आफ पालिटिक्स को प्राथमिकता दे रही है। 2024 के लोकसभा चुनाव में पूर्व दो चुनावों की अपेक्षा भाजपा को कम सीटें मिलीं, जिसके पीछे विपक्ष द्वारा संविधान और आरक्षण को लेकर फैलाया गया भ्रम था। चुनाव के तुरंत बाद जनता ने समझ लिया कि विपक्ष की नकारात्मक राजनीति देश के विकास में बाधक है और हरियाणा, महाराष्ट्र और अब दिल्ली की जनता का जनादेश इसका संकेत कर रहा है कि जनता अब बेहद जागरूक होकर अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए मतदान कर रही है। आज भारत केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि तकनीकी क्रांति में अग्रणी योगदान भी दे रहा है। हाल में फ्रांस में आयोजित एआइ सम्मेलन में भारत की भागीदारी से स्पष्ट हुआ कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में भारत एक निर्णायक शक्ति के रूप में उभर रहा है। इस सम्मेलन में भारत और फ्रांस के बीच एआइ आधारित रक्षा को बढ़ावा देने के लिए दोनों देशों के बीच सहयोग को प्रेरित करेगी। इसके अंतर्गत वर्ष के अंत तक एआइ इन्फ्रास्ट्रक्चर को गति देने के लिए प्रतिबद्धता जताई गई है। भारत अगले दो वर्षों में 44 हजार करोड़ केवल टेक्नोलाजी क्षेत्र में निवेश करने की योजना पर भी काम कर रहा है, जिससे युवाओं को रोजगार तो मिलेगा ही साथ में एआइ के क्षेत्र में भारत दुनिया का नेतृत्व भी करता हुआ दिखाई देगा। इस प्रकार भारत सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया मिशन और एआइ-मशीन लर्निंग रिसर्च को बढ़ावा देने से यह संकेत मिलता है कि भविष्य में भारत टेक्नोलाजी का उपभोक्ता के साथ-साथ वैश्विक आपूर्तिकर्ता भी बनेगा। बीते एक दशक में भारत ने केवल आर्थिक और तकनीकी क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि कूटनीति और वैश्विक राजनीति में भी अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई है कॉप-26 में जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए 2070 तक नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य हो अथवा वित्त वर्ष 2023-24 में 800 अरब डालर से अधिक का निर्यात, इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक व्यापार में मजबूत हो रही है। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम उठाए हैं, जिससे वह अब दुनिया के हथियार निर्यातक देशों में शामिल हो रहा है। साफ है मोदी सरकार की आर्थिक नीतियां, तकनीक के क्षेत्र में प्रगति, कूटनीतिक कौशल और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता ने भारत को एक नई दिशा दी है। आने वाले वर्षों में भारत न केवल एक उभरती हुई शक्ति रहेगा, बल्कि एक स्थापित वैश्विक ताकत के रूप में अपनी स्थिति और सुदृढ़ करेगा।

हर साल समुद्रों से निकाली जा रही ८०० करोड़ टन तक रेत, समुद्री जीवन के लिए है खतरनाक

रेत खनन से न केवल तटीय क्षेत्र कटाव का सामना कर रहे हैं बल्कि इससे समुद्री जीवों के आवास को भी बहुत ज्यादा नुकसान हो रहा है। यह आक्रामक प्रजातियों के प्रसार में सहायक हो रहा है और इसकी वजह से मत्स्य पालन में भी कमी आ रही है। रेत खनन से पानी धुंधला हो जाता है और यह समुद्री घास और मूंगे को नष्ट कर देता है। इसकी वजह से समुद्री आवास खंडित हो जाते हैं। इसके कारण 500 से ज्यादा समुद्री प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर हैं। इतना ही नहीं यह लहरों के पैटर्न में भी बदलाव की वजह बन रहा है। इसी तरह खनन, अन्य तरीकों से भी समुद्री जीवन को नुकसान पहुंचा रहा है। शोधकर्ताओं का कहना है कि रेत खनन से समुद्री जीवन और विविधता को नुकसान पहुंच रहा है। रेत न केवल इंसानों बल्कि प्रकृति के लिए भी बेहद आवश्यक है। ऐसे में इसे संतुलित किए जाने की आवश्यकता है।रेत प्रकृति और मानव विकास दोनों के लिए आवश्यक है। यह न केवल निर्माण बल्कि प्राकृतिक दुनिया को भी आकार देती है। इसका दोहन एक वैश्विक चुनौती बन चुका है। मेटाकपलिंग फ्रेमवर्क जैसे उपकरण जटिलता को सुलझाने के लिए आवश्यक हैं। यह न केवल रेत खनन के स्थानों बल्कि परिवहन मार्गों और जिन स्थानों में निर्माण के लिए रेत का उपयोग किया जा रहा है वहां भी इनके छिपे प्रभावों को उजागर करने में मदद करते हैं। मोटेतौर मेटाकपलिंग अध्ययन करने का एक ऐसा नया तरीका है जो बताता है कि किस तरह से मनुष्य और प्रकृति परस्पर क्रिया करते हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार वैश्विक स्तर पर अगले 38 वर्षों में रेत की मांग करीब 44 फीसदी बढ़ जाएगी। 2020 में रेत की मांग 320 करोड़ मीट्रिक टन प्रति वर्ष थी वह 2060 तक बढ़कर 460 करोड़ मीट्रिक टन प्रति वर्ष पर पहुंच जाएगी। यानी इन 40 वर्षों में इसमें करीब 140 करोड़ मीट्रिक टन की बढ़ोतरी होने की सम्भावना है। शोधकर्ताओं ने इस बात को भी स्वीकार किया है कि रेत का कुल कितना प्राकृतिक भंडार मौजूद है इसकी सटीक जानकारी उपलब्ध नहीं है। लेकिन इतना स्पष्ट है कि जिस तेजी से इसकी मांग बढ़ रही है, आने वाले वक्त में इसकी भारी किल्लत हो जाएगी। इसके अलावा दुनिया भर में हर साल करीब 5,000 करोड़ टन रेत और बजरी नदियों, झीलों आदि से निकाली जा रही है।

यह दुनिया में सबसे ज्यादा खनन की जाने वाली सामग्री है। पिछले कुछ वर्षों में ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में बढ़ते शहरीकरण की वजह से रेत, बजरी और छोटे पत्थरों की मांग में तेजी से वृद्धि हुई है। वहीं यदि सीमेंट की मांग को देखें तो पिछले 20 वर्षों के दौरान दुनिया भर में इसकी मांग में 60 फीसदी की वृद्धि हुई है। सीमेंट की मांग सीधे तौर पर रेत और बजरी की बढ़ती खपत से जुड़ी है। इसी विषय से जुड़े हुए एक अन्य शोध में लीडेन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया है कि भारत में भी तेजी के साथ बढ़ते शहरीकरण के कारण अलगे 38 वर्षों में रेत की मांग में 294.4 फीसदी का इजाफा हो सकता है। इसी तरह 2020 से 2060 के बीच अमेरिका में रेत की कुल मांग 568 करोड़ टन रहने की सम्भावना है, उसके विपरीत भारत में यह करीब 2,590 करोड़ टन पर पहुंच जाएगी। वहीं चीन में इसके सबसे ज्यादा 4,570 करोड़ टन रहने की सम्भावना है। पिछले 20 वर्षों के दौरान चीन में इसकी मांग में करीब 438 फीसदी की जबरदस्त वृद्धि दर्ज की गई है। पिछड़े और कम आय वाले देशों में 2060 तक रेत की मांग में 300 फीसदी तक की वृद्धि हो सकती है। पूर्वी अफ्रीका में यह मांग सबसे ज्यादा 543.6 फीसदी रहने की सम्भावना है। इसके बाद पश्चिम अफ्रीका में 488.5 फीसदी की वृद्धि की सम्भावना है। मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी और अध्ययन से जुड़े प्रमुख शोधकर्ता जियांगुओ लियू का इस बारे में कहना है कि दुनिया में शहरीकरण और बढ़ते निर्माण के साथ रेत की मांग लगातार बढ़ रही है। इसे मांग को पूरा करने के लिए रेत खनन में लगातार वृद्धि हो रही है। इसका सीधा असर पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ रहा है। आज जिस तेजी से खनन किया जा रहा है वह मानव प्रकृति के बीच में रेत के विशाल भण्डार मौजूद हैं, लेकिन समस्या यह है कि उस रेत का अधिकांश भाग औद्योगिक उपयोग के लिए अनुपयुक्त है। ऐसे में निर्माण सम्बन्धी जरूरतों के लिए सबसे उपयोगी रेत समुद्र और नदियों के तल से ली जाती है। शोध के निष्कर्ष में कहा गया है कि चूंकि रेत खनन कटाव, जलवायु अनुकूलन और जैव विविधता को प्रभावित करता है ऐसे में इसे समुद्री संरक्षण, जलवायु योजनाओं और संसाधन प्रबंधन जैसी पर्यावरण संबंधी नीतियों में शामिल किया जाना चाहिए। इससे पहले कि समस्या और बदतर हो जाए इससे उबरने के लिए बेहतर समझ, सख्त नियमों और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने के प्रयासों पर जोर दिए जाने की आवश्यकता है।

आजाद समाज पार्टी ने निकाला जुलूस किया विरोध

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। आजाद समाज पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा सोमवार को अपनी मांगों को लेकर प्रदेश व्यापी धरना प्रदर्शन के क्रम में कलेक्ट्रेट परिसर में विरोध प्रदर्शन व जुलूस निकालकर राष्ट्रपति नामित ज्ञापन जिलाधिकारी नामित एसडीएम को देकर बुलंद की आवाज। आजाद समाज पार्टी जिला अध्यक्ष रविकांत ने बताया कि अनु0 जाति, अनु0जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं धार्मिक अल्पसंख्यक समाज पर किये जा रहे अन्याय अत्याचार एवं उत्पीड़न और मथुरा की घटना में सांसद एडवोकेट चन्द्रशेखर आजाद के काफिले पर हमले के विरोध में ज्ञापन-दिया गया । जिला अध्यक्ष ने बताया कि उ0प्र0 में वर्तमान भाजपा सरकार में प्रत्येक दिन किसी न किसी जनपद में सामन्तवादी मानसिकता एवं जातिवादी मानसिकता से ग्रसित आसामाजिक लोगों के द्वारा लगातार एक के बाद एक अनेकों घटनायें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति अन्य पिछड़ा वर्ग एवं धार्मिक अल्पसंख्यक समाज के गरीब एवं कमजोर लोगों पर जान लेवा मारपीट, हत्या एवं बलात्कार और उत्पीड़न की घटनाएं हो रही हैं भाजपा सरकार इन लोगों पर होने वाली घटनाओं को रोक नहीं पा रही है। इसी प्रकार की घटनाएँ मथुरा जनपद में पिछले पन्द्रह दिन के अन्दर तीन स्थानों पर हुई है। पहली घटना गांव सिर्रेला थाना माँट में पिछड़े वर्ग के वासुदेव बघेल युवक की हत्या की गई। दूसरी घटना गांव करनावल थाना रिफाइनरी में अनुसूचित जाति की बेटियों की शादी से पहले ही एक राय होकर बेटियों पर एवं बाराती एवं घरातियों पर लाठी, डण्डों से हमला किया मारपीट की गई बारात नहीं चढ़ी शादी भी नहीं होने दी. आज भी दोनों दुल्हन बनी लड़?कियां एवं परिवारजन रो रहे हैं। तीसरी घटना गांव भगत सिंह नगलिया थाना सुरीर में हुई इसमें चन्द्रपाल एवं इनके परिवारीजनों के घर पर आकर फायरिंग की गई एवं हमला बोला गया इसमें तीन लोगों को गम्भीर चोटे आयी हैं। चौथी घटना गांव कालिन्दी थाना सरदना जनपद मेरठ में बारात पर लाठी-डण्डों से हमला किया बारातियों को मारापीटा गया एवं दुल्हन का जेवर आदि सामान लूट लिया बारात चढ़ने नहीं दी। वही उपरोक्त ताबड़ तोड़ घटनाओं से पूरा मथुरा जनपद एवं उ0प्र0 के गरीब कमजोर लोगों में भय व्याप्त हो गया। वही पीड़ित परिवारीजनों से इनके दुःख में मिलने हेतु एवं इनके ऊपर होने वाले अन्याय अत्याचार को सरकार के जिम्मेदार अधिकारियों को इनकी सुरक्षा व्यवस्था कराने हेतु दिनांक 28 फरवरी को भीम आर्मी के चीफ एवं आजाद समाज पार्टी कांशीराम के राष्ट्रीय अध्यक्ष नगीना से लोकप्रिय सांसद एडवोकेट भाई चन्द्रशेखर आजाद जी तीनों घटना स्थलों पर गये। घटना स्थल थाना सुरीर के पास पहुँचने से पहले ही माननीय सांसद जी के साथ चल रही कार्यकर्ताओं की काफिले की गाड़ियों पर विरोधियों ने सुनियोजित तरीके से पुलिस की मौजूदगी में हमला बोल दिया। पुलिस के अधिकारी कुछ सुरक्षा व्यवस्था नहीं कर पाये, इतना ही नहीं पीड़ितों से मिलने के बाद लौटते समय भी पुनः हमलावरों ने पुलिस की मौजूदगी में ही हमला बोला। इन हमलों से हमारे साथ चल रही गाड़ियों को तोड़ा गया हमारे कई कार्यकर्ता गम्भीर रूप से घायल भी हुए हैं। द्वार वर्ग महोदय आपसे अनुरोध करते हुए माँग की जाती है कि ऐसी घटनाओं को उत्तर प्रदेश भाजपा सरकार रोक नहीं पा रही है कृपया करके उ0प्र0 में राष्ट्रपति शासन लगाया जाये तथा कमजोर लोगों की सुरक्षा के सम्बन्ध में आवश्यक कदम उठाते हुए तत्काल अनु0 जाति जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग तथा धार्मिक अल्पसंख्यकों पर होने वाले उत्पीड़न तथा अन्याय अत्याचार को रोका जाये। भविष्य में हमारी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष या नेताओं के काफिलों पर इस प्रकार की घटना न हो इसके लिए आवश्यक कदम उठाये जायें। गांव सिर्रेला थाना माँट के मृतक परिवारजनों को पच्चीस लाख रूपये सहायता राशि दी जाये। गांव भगत सिंह नगलिया थाना सुरीर के घायलो को पाँच-पाँच लाख रूपये दिये जाये इन्हें तत्काल आत्मरक्षा के लिए लाईसेंस दिये जाये तथा इनकी सुरक्षा हेतु फोर्स लगाया जाये। दोषी लोगों पर सख्त कानूनी कार्यवाही की जाये। करन बेटिय चढ़ महोदय यदि हमारी माँगे नहीं मानी गई तो हमारी पार्टी आन्दोलन करने के लिए बाध्य होगी। प्रथम चरण में 3 मार्च को सभी जनपद मुख्यालयों पर धरना प्रदर्शन होगा। दूसरे चरण में आगामी 10 मार्च को लखनऊ में विधानसभा के सामने धरना प्रदर्शन किया जायेगा। इस दौरान चंद्रशेखर कुमार, राहुल,संजय,विनोद,डॉक्टर सुरेंद्र अरुण कुमार ,रोहित कुमार ,सुरेंद्र, संदीप, पवन, अमित आदि लोग मौजूद रहे।

बॉलीवुड/टेली मसाला

रिलीज से पहले ही 'कुली' पर बरसने लगा पैसा, ओटीटी पर इतने करोड़ में बिकी रजनीकांत की फिल्म

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। रजनीकांत की फिल्म 'कुली' रिलीज से पहले ही ओटीटी प्लेटफॉर्म पर मोटी रकम में बेची गई है। एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि यह रजनीकांत की किसी भी फिल्म की अब तक की सबसे बड़ी ओटीटी डील है।सुपरस्टार रजनीकांत की फिल्म 'कुली' की चर्चा इन दिनों खूब हो रही है। यह इस साल बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है। हाल ही में फिल्म के कुछ बीटीएस तस्वीरें सामने आई थी, जिसे देखने के बाद फैंस की उत्सुकता काफी ज्यादा बढ़ गई थी। वहीं, अब फिल्म की ओटीटी डील को लेकर एक बड़ी जानकारी सामने आई है। कोइमोई की एक रिपोर्ट के मुताबिक अमेजन प्राइम वीडियो ने इस फिल्म के डिजिटल राइट्स को 120 करोड़ रुपये में खरीदा है। हालांकि, अभी इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। रजनीकांत की किसी फिल्म की यह अब तक की सबसे बड़ी ओटीटी डील है। इससे पहले उनकी सुपरहिट फिल्म 'जेलर' के डिजिटल राइट्स भी अमेजन प्राइम ने 100 करोड़ रुपये में खरीदे थे। लोकेश

कनगराज के निर्देशन में बन रही 'कुली' धमाकेदार एक्शन से भरपूर होने की उम्मीदें हैं। फिल्म की कहानी को अभी पूरी तरह से गोपनीय रखा गया है, लेकिन माना जा रहा है कि इसमें रजनीकांत का किरदार थोड़ा नकारात्मक रंग के साथ नजर आ सकता है। रजनीकांत के अलावा फिल्म में नागार्जुन अक्किनेनी और उपेंद्र राव जैसे बड़े सितारे अहम किरदारों में दिखेंगे। श्रुति हासन, सौबिन शाहिर और सत्यराज भी फिल्म महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाएंगे। खास बात यह है कि पूजा हेगड़े एक स्पेशल डांस नंबर में नजर आएंगी। कुछ समय पहले खबरें थीं कि 'कुली' की रिलीज डेट ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर की फिल्म 'वॉर 2' से टकरा सकती है। हालांकि, ताजा जानकारी के मुताबिक ऐसा नहीं होगा। दोनों फिल्मों की रिलीज डेट अलग-अलग रखी गई है। हाल ही में रजनीकांत फिल्म 'वेट्टैयन' में नजर आए थे। इस फिल्म का निर्देशन टीजे ज्ञानवेल ने किया था। इस पुलिस एक्शन ड्रामा में उन्होंने एक आईपीएस अधिकारी की भूमिका निभाई थी। 'कुली' के अलावा रजनीकांत 'जेलर 2' में भी दिखेंगे। नेल्सन दिलीपकुमार के निर्देशन में बन रही इस सीक्वल में वे एक बार फिर टाइगर मुथुवेल पांडियन के किरदार में लौटेंगे। 'जेलर' की जबर्दस्त कामयाबी के बाद फैंस इसके अगले भाग का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

बॉक्स ऑफिस पर 'छावा' के 30 दिन पूरे, फिल्म के लिए अब दूर नहीं 600 करोड़ की मंजिल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। विक्की कौशल की फिल्म 'छावा' ने आज शनिवार को बॉक्स ऑफिस पर 30 दिन शानदार तरीके

से पूरे कर लिए हैं। अब भी फिल्म की शानदार कमाई जारी है। जानते हैं आज कितना कलेक्शन किया?फिल्म 'छावा' को सिनेमाघरों में रिलीज हुए आज शनिवार को एक महीना पूरा हो गया है। लक्ष्मण उतेकर के निर्देशन में बनी यह फिल्म अब भी बॉक्स ऑफिस पर चांदी काट रही है। 14 फरवरी को वैलेंटाइन डे के दिन रिलीज हुई यह फिल्म विक्की कौशल के करियर की सबसे बड़ी ओपनर साबित हुई और यह उनके करियर की भी सबसे बड़ी फिल्म बन गई है। जानते हैं आज 30वें दिन फिल्म ने कैसा प्रदर्शन किया फिल्म 'छावा' संभाजी महाराज के जीवन पर बनी फिल्म है। इसमें विक्की कौशल ने लीड रोल किया है। फिल्म के तथ्यों को लेकर कई सवाल उठाए गए। इस पर विवाद भी हुए, लेकिन किसी भी बात का फर्क इसके कलेक्शन पर नहीं पड़ा। 500 करोड़ रुपये क्लब में शामिल हो चुकी फिल्म अब 600 करोड़ क्लब में एंट्री की तैयारी में है। कल शुक्रवार 14 मार्च को होली पर फिल्म ने 7.25 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था। महीनेभर से 'छावा' मजबूती से सिनेमाघरों में टिकी है।

जन्नत से ब्रेकअप की अफवाह के बीच फैजल मनाते दिखे शो में होली, क्या खुशियों में भूल गए गम

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। बॉलीवुड से लेकर टीवी इंडस्ट्री तक कई जोड़ियां टूट रही हैं। हाल ही में टीवी एक्ट्रेस जन्नत जुबैर और इंफ्लुएंसर फैजल शेख के अलग होने की खबर सामने आई।

इन्हीं खबरों के बीच फैजल होली के रंग में रंगे दिखे। हाल ही में एक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें वह अपने को-एक्टर्स के साथ खूब मस्ती कर रहे हैं। इंफ्लुएंसर फैजल शेख और टीवी एक्ट्रेस जन्नत जुबैर अकसर साथ नजर आए हैं, एक-दूसरे को अपना अच्छा दोस्त बताते हैं। लेकिन इनके फैंस का मानना है कि जन्नत और फैजल रिलेशनशिप में हैं। हाल ही में इनके ब्रेकअप की अफवाह सामने आईं। इसी खबर के बीच फैजल शेख अपने एक शो में होली मनाते दिखे, हंसते-मुस्कुराते दिखे। हाल ही में सोनी टीवी ने अपने इंस्टाग्राम पेज पर 'सेलिब्रिटी मास्टर शेफ' का एक वीडियो पोस्ट किया, ये होली के स्पेशल एपिसोड का प्रोमो वीडियो है। इसमें फैजल शेख और बाकी प्रतियोगी होली के रंग उड़ा रहे हैं। फैजल भी इस वीडियो में काफी खुश दिख रहे हैं। जबकि इन दिनों उनके और जन्नत जुबैर के ब्रेकअप की खबर भी सामने आ रही है पिछले दिनों 'सेलिब्रिटी मास्टरशेफ' में फैजल ने कहा था कि जब यह शो खत्म हो जाएगा तो पक्का उनकी शादी हो जाएगी। तब जज फराह खान ने कहा था- 'मैं तो करा के ही रहूंगी तेरी शादी। जन्नत की सैर तो कराऊंगी।' इसके बाद सोशल मीडिया यूजर्स को लगा कि फैजल जल्द ही जन्नत से शादी करेंगे। जन्नत जुबैर ने पिछले दिनों फैजल शेख को इंस्टाग्राम पर अनफॉलो कर दिया। इसी कारण कहा जाने लगा कि ये दोनों अब अलग हो चुके हैं। साथ ही जन्नत ने एक पोस्ट भी किया, जिसमें लिखा- 'जिंदीग में जो भी है, उसे अपना लो और जो कुछ गुजर गया उसे जाने दो।

रवीना टंडन की बेटी संग खुश दिखीं तमन्ना, विजय वर्मा से ब्रेकअप को लेकर चर्चा में अभिनेत्री

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। तमन्ना भाटिया और विजय वर्मा लंबे वक्त से डेट कर रहे थे लेकिन हाल ही में इनके ब्रेकअप की खबर सुनने को मिली। विजय वर्मा से ब्रेकअप को अफवाहों के बीच अभिनेत्री तमन्ना

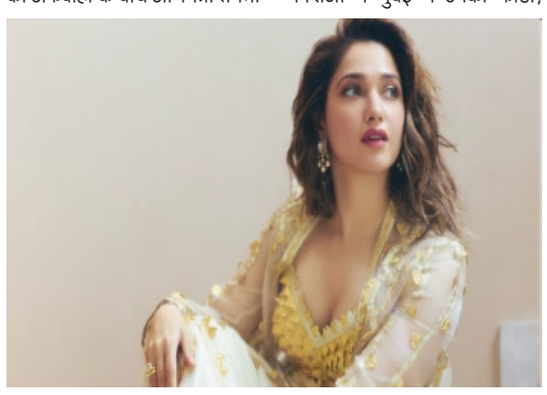

अपने दोस्तों के साथ नजर आईं। अभिनेत्री का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल है, इसमें वह काफी खुश दिख रही हैं। तमन्ना भाटिया और विजय वर्मा जल्द ही शादी करेंगे कुछ वक्त पहले तक ये खबर चर्चा में रही। लेकिन अब इन जोड़ी के अलग होने की खबरें भी सामने आ रही हैं। दोनों काफी समय से एक-दूसरे के साथ नजर नहीं आ रहे हैं। हाल ही में तमन्ना को अपने करीबी दोस्तों के साथ देखा गया, पैपराजी ने मुंबई में उनकी फोटो, वीडियो लीं, जिसमें तमन्ना काफी खुश नजर आ रही हैं। तमन्ना का जो वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, उसमें वह राशा थडानी यानी रवीना टंडन की बेटी के साथ नजर आ रही हैं। राशा और तमन्ना के बीच काफी अच्छी दोस्ती है। दोनों को अकसर साथ देखा जाता है। राशा को तमन्ना काफी सपोर्ट करती हैं। जब राशा की पहली फिल्म 'आजाद' रिलीज हुई थी तो तमन्ना ने उन्हें काफी सपोर्ट किया था। तमन्ना का जो वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, उसमें वह राशा थडानी यानी रवीना टंडन की बेटी के साथ नजर आ रही हैं। राशा और तमन्ना के बीच काफी अच्छी दोस्ती है। दोनों को अकसर साथ देखा जाता है। राशा को तमन्ना काफी सपोर्ट करती हैं। जब राशा की पहली फिल्म 'आजाद' रिलीज हुई थी तो तमन्ना ने उन्हें काफी सपोर्ट किया था। पिछले दिनों भी एक इंटरव्यू में तमन्ना भाटिया ने प्यार को लेकर बात की। वह कहती हैं, 'प्यार बिना शर्त होना चाहिए। मेरा मानना है कि अगर किसी से प्यार करें तो उन्हें फ्री छोड़ देना चाहिए। जैसे वो हैं, उन्हें वैसे ही रहने देना चाहिए।' तमन्ना भाटिया अपनी निजी जिंदगी से हटकर अपनी फिल्मों को लेकर भी चर्चा में हैं। जल्द ही उनकी एक फिल्म 'ओडेला 2' रिलीज होगी। इस फिल्म में तमन्ना का लुक और किरदार दोनों ही काफी हटकर हैं। यह एक सुपरनेचुरल थ्रिलर है।

मुझे सलमान से डरने के लिए कहा गया, सौरभ शुक्ला ने साझा किया 'किक' का दिलचस्प किस्सा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। सौरभ शुक्ला ने 'किक' की शूटिंग के दौरान का एक दिलचस्प

किस्सा शेयर किया। उन्होंने बताया कि एक विशेष सीन के दौरान उन्हें सलमान खान से डरने के लिए कहा गया।अभिनेता सौरभ शुक्ला की गिनती बॉलीवुड के शानदार अभिनेताओं में होती है। उन्होंने कई सारी हिट और बड़ी फिल्मों में अहम भूमिका निभाई है। हाल ही में उन्होंने सलमान खान की फिल्म 'किक' का एक किस्सा साझा किया। उन्होंने बताया कि फिल्म की शूटिंग के दौरान किसी ने उनसे सलमान खान से डरने के लिए कहा था। आइए जानते हैं पूरे किस्से को विस्तार से। 'किक' में सौरभ शुक्ला ने अहम भूमिका निभाई थी। जिसमें सलमान खान और जैकलीन फर्नांडीज मुख्य भूमिका में थे। अभिनेता ने जैकलीन के पिता का किरदार निभाया था। डिजिटल कमेंट्री से बातचीत में सौरभ ने एक सीन का जिक्र करते हुए कहा, ठसलमान का किरदार पहली बार मेरी बेटी के बॉयफ्रेंड के तौर पर मुझसे मिलने आया है। दिलचस्प बात यह है कि सीन इस तरह से लिखा गया है कि वह मुझसे मेरी सैलरी, मेरी बचत आदि के बारे में पूछता है। इसलिए जब मुझसे यह सवाल पूछा गया तो मैंने इस तरह से प्रतिक्रिया दी कि दर्शकों को लगा कि मैं उस सवाल से हैरान हूं अभिनेता ने आगे कहा, ठसीन शूट होने के बाद, सलमान के एक असिस्टेंट मेरे पास आए और कहा कि मुझे उस सीन में अपनी प्रतिक्रिया बदलनी होगी। असिस्टेंट को लगा कि मुझे सलमान के देवी लाल सिंह के सामने डरे हुए जैसा व्यवहार करना चाहिए। जब मैंने यह तर्क देने की कोशिश की कि इस तरह की प्रतिक्रिया का कोई मतलब नहीं है, तो उनके सहायक ने बताया कि सलमान को शायद यह प्रतिक्रिया पसंद ना आए। सलमान ने अपने असिस्टेंट को बुलाया और उससे कहा कि वह मुझे बिल्कुल भी परेशान न करे। उन्होंने उससे कहा कि मेरी एक्टिंग बिल्कुल सही थी और यह सीन के लिए एकदम सही रिएक्शन था।फिल्म 'किक' में रणदीप हुड्डा और नवाजुद्दीन सिद्दीकी भी मुख्य भूमिकाओं में नजर आए थे। फिल्म का निर्माण और निर्देशन साजिद नाडियाडवाला ने किया था। सलमान की आगामी फिल्म 'सिकंदर' में नजर आएंगे, जो इस साल ईद पर रिलीज होगी। फिल्म में उनका साथ रश्मिका मंदाना देंगी। इसका निर्देशन एआर मुरुगादॉस कर रहे हैं।

प्रभास के फैंस के लिए खुशखबरी, सलार री-रिलीज की एडवांस बुकिंग जानिए कब से होगी शुरू

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। प्रभास की फिल्म सलार पार्ट 1: सीजफायर एक बार फिर से सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है। यह फिल्म 21 मार्च 2025 को बड़े पर्दे पर दोबारा रिलीज होगी। इसके लिए एडवांस बुकिंग के बारे में ताजा जानकारी सामने आई है।साल 2023 में रिलीज हुई प्रभास की फिल्म सलार का पहला भाग रिलीज हुआ था। वहीं फिल्म निर्माताओं ने फिल्म सलार के दूसरे भाग की रिलीज से पहले इसके पहले भाग को फिर से सिनेमाघरों में रिलीज करने का फैसला किया है। आइए जानते हैं फिल्म की एडवांस बुकिंग कब से शुरू होगी। पिंकविला की रिपोर्ट्स के अनुसार, सलार भाग 1 की एडवांस बुकिंग कल से शुरू होगी और फिल्म के पास टिकटों की प्री-सेल के लिए 9-10 दिन का समय है, क्योंकि यह फिल्म 21 मार्च को सिनेमाघरों में फिर से रिलीज होगी। सलार 1' फिल्म पहली बार दिसंबर 2023 में सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। उस समय इस फिल्म का मुकाबला बॉक्स ऑफिस पर शाहरुख खान की फिल्म 'डंकी' से हुआ था। उस समय सलार ने बॉक्स ऑफिस पर दुनिया भर में 600 करोड़ रुपये कमाए थे। हालांकि सिनेमाघरों में यह फिल्म उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी, लेकिन ओटीटी पर इसे दर्शकों ने बहुत पसंद किया था।

ब्रेस्ट कैंसर के इलाज के दौरान अचानक क्यों बदला हिना के नाखूनों का रंग, अभिनेत्री ने किया खुलासा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। अभिनेत्री हिना खान ब्रेस्ट कैंसर से जूझ रही हैं। उनका उपचार चल रहा है। इस दौरान उनके नाखूनों के रंग में बदलाव देखा गया है। फैंस उनसे इसकी वजह पूछ रहे हैं। हाल ही में हिना खान ने इसका खुलासा किया है। अभिनेत्री हिना खान तीसरी स्टेज के ब्रेस्ट कैंसर का उपचार करा रही हैं। अपनी हेल्थ को लेकर वे सोशल मीडिया पर फैंस से अक्सर अपडेट शेयर करती नजर आती हैं। हाल ही में उन्होंने बताया कि उनकी कीमोथेरेपी पूरी हो चुकी हैं। और सर्जरी भी हो चुकी है। उपचार के दौरान हिना खान के नाखूनों के रंग में बदलाव नजर आया है। इसकी वजह हिना ने स्पष्ट की है।हिना खान की हालिया कुछ तस्वीरों को गौर से देखने पर उनके नाखूनों के रंग में बदलाव नजर आएगा। एक्ट्रेस के नाखून हल्के काले दिख रहे हैं। इसे लेकर फैंस ने उनसे सवाल किए हैं। साथ ही उनके जानने वालों ने भी इसकी वजह पूछी है। कुछ लोगों ने जानना चाहा कि क्या हिना इस रंग की कोई नेलपॉलिश लगा रही हैं। इन सभी सवालों का जवाब हिना ने अपने हालिया पोस्ट में दिया है।हिना खान ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक स्टेटस शेयर किया है। इसमें उन्होंने एक तस्वीर लगाई है, जिसमें

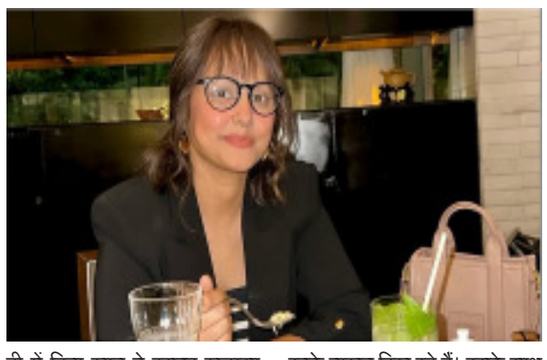

ही में हिना खान ने इसका खुलासा किया है। अभिनेत्री हिना खान तीसरी स्टेज के ब्रेस्ट कैंसर का उपचार करा रही हैं। अपनी हेल्थ को लेकर वे सोशल मीडिया पर फैंस से अक्सर अपडेट शेयर करती नजर आती हैं। हाल ही में उन्होंने बताया कि उनकी कीमोथेरेपी पूरी हो चुकी हैं। और सर्जरी भी हो चुकी है। उपचार के दौरान हिना खान के नाखूनों के रंग में बदलाव नजर आया है। इसकी वजह हिना ने स्पष्ट की है।हिना खान की हालिया कुछ तस्वीरों को गौर से देखने पर उनके नाखूनों के रंग में बदलाव नजर आएगा। एक्ट्रेस के नाखून हल्के काले दिख रहे हैं। इसे लेकर फैंस ने उनसे सवाल किए हैं। साथ ही उनके जानने वालों ने भी इसकी वजह पूछी है। कुछ लोगों ने जानना चाहा कि क्या हिना इस रंग उनके नाखून दिख रहे हैं। इसके साथ लिखा है, 'आप में से बहुत से लोग मेरे नाखूनों के बारे में पूछ रहे हैं। यह ठीक है। इस बारे में सवाल करने वालों में मेरी बिल्डिंग के कुछ लोग भी शामिल हैं...मैंने कोई नेल पॉलिश नहीं लगाई है। मैं नेल पेंट लगाकर प्रार्थना कैसे कर सकती हूं। थोड़ा दिमाग लगाओ मेरे प्यारे साथियों'।हिना ने आगे लिखा है, 'नाखूनों का रंग उड़ना कीमोथेरेपी के सबसे कॉमन साइड इफैक्ट्स में से एक है। मेरे नाखून ड्राई हो गए हैं और टूटने लगे हैं। कमजोर होने के कारण कभी-कभी नाखून सतह से ऊपर उठ जाते हैं। लेकिन, इन सब बदलावों के बीच जो सबसे अच्छी बात है वो ये कि यह सभी कुछ अस्थाई है। यह बात हम सभी याद रखें। बाकी सब ठीक है'।

'द डिप्लोमैट' की कमाई में दूसरे दिन दिखा मामूली सुधार, 'छावा' पहुंची 550 करोड़ के पार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। फिल्म 'द डिप्लोमैट' की कमाई में दूसरे दिन सुधार देखने को मिला है। वहीं, 'छावा' ने 550 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर लिया है। आइए दोनों फिल्मों के शनिवार के कलेक्शन के बारे में जानते हैं...इन दिनों 'द डिप्लोमैट' और 'छावा' सिनेमाघरों में प्रदर्शित हो रही है। जॉन अब्राहम की फिल्म ओपनिंग डे पर अच्छा प्रदर्शन करने

में नाकाम रही थी। वहीं, छावा अब भी टिकट खिड़की पर शानदार कारोबार कर रही है। आइए जानते हैं कि शनिवार को इन दोनों ही फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर कैसा प्रदर्शन किया।'द डिप्लोमैट' में जॉन अब्राहम के साथ सादिया खतीब और कुमुद मिश्रा भी मुख्य भूमिका में नजर आए हैं। यह कहानी 2017 में घटी एक घटना से प्रेरित है, जिसमें एक भारतीय महिला के पाकिस्तान में फंसने और वहां से वापस लाए जाने की घटना को रोचक अंदाज में पेश किया गया है। फिल्म में जॉन अब्राहम एक भारतीय राजनयिक जेपी सिंह की भूमिका में हैं जो अपनी सूझबूझ और कूटनीतिक कौशल से उसे बचाते हैं। यह फिल्म फैंस को काफी पसंद आई है। वहीं, कई समीक्षकों ने भी इसकी तारीफ की है। फिल्म के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन की बात करें तो पहले दिन फिल्म ने धीमी शुरुआत की। शुक्रवार को फिल्म ने चार करोड़ रुपये से ओपनिंग ली। वहीं, दूसरे दिन फिल्म के कलेक्शन में थोड़ा सुधार नजर आया। शनिवार को फिल्म ने चार करोड़ 50 लाख रुपये का कलेक्शन किया। इसके साथ ही फिल्म की कुल कमाई अब आठ करोड़ 50 लाख रुपये हो गई है। छावा' बॉक्स ऑफिस पर अब भी छाई हुई है। फिल्म 600 करोड़ी क्लब की ओर तेजी से बढ़ती नजर आ रही है। हाल ही में इस फिल्म के तेलुगु संस्करण को रिलीज किया गया है। दक्षिण में भी यह फिल्म अच्छा प्रदर्शन कर रही है। वीकएंड आते ही फिल्म की रफ्तार एक बार फिर से तेज हो गई। चौथे हफ्ते में इस फिल्म ने 55.95 करोड़ रुपये कमाए थे।वहीं, पांचवें हफ्ते की शुरुआत में भी फिल्म का कारोबार काफी अच्छा रहा है। पांचवें शुक्रवार को फिल्म ने सात करोड़ 25 लाख रुपये का कलेक्शन किया। वहीं, 30वें दिन इस फिल्म ने आठ करोड़ रुपये की कमाई की।

छोटे कद के कारण अधूरा रहा आर्मी में जाने का सपना, गरीबी नहीं छीन पाई चेहरे

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। कॉमेडियन और अभिनेता राजपाल यादव आज रविवार 16 मार्च को अपना जन्मदिन मना रहे हैं।

उन्होंने बहुत संघर्षों से गुजरकर यह मुकाम हासिल किया है। जानते हैं उनके बारे में कौन कहता है आसमान में सुराख नहीं होता, एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों'! दुष्यंत कुमार की ये लाइनें अभिनेता राजपाल यादव पर एकदम सटीक बैठती हैं। परदे पर अपनी कॉमेडी से वे दर्शकों को खूब हंसाते हैं। असल जिंदगी में भी वे उतने ही सकारात्मक हैं। जिंदगी में ऐसे कई मौके आए, जब उनका जीवन उदासी से भरा, मगर अभिनेता ने मुश्किल वक्त में भी कुछ बेहतर ढूंढ लिया। यही उनके जीवन का मंत्र है। उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर के कुण्डरा गांव में जन्मे राजपाल यादव ने फिल्मी दुनिया में बड़ा नाम कमाया है। उनकी राह संघर्षों से भरी रही। आइए जानते हैं उनके बारे में.राजपाल यादव का जन्म 16 मार्च 1971 को यूपी के शाहजहांपुर के कुण्डरा गांव में हुआ। उनके पिता नौरंग यादव किसान थे। राजपाल यादव छह भाई हैं। राजपाल यादव का बचपन गांव के कच्चे मकान में बीता। एक इंटरव्यू में अभिनेता ने बताया कि उनके गांव में एक भी पक्का घर नहीं था। गांव की मिट्टी में उनका बचपन बीता। परिवार की माली हालत ठीक नहीं होने के बावजूद राजपाल यादव के पिता ने उनकी शिक्षा पर जोर दिया। उनका दाखिला दूर शहर के स्कूल में कराया। राजपाल यादव बचपन से ही जिंदगी में कुछ बड़ा करना चाहते थे। यूं तो वे आर्मी जॉइन करना चाहते थे, लेकिन छोटे कद के कारण ऐसा नहीं हो सका। अभिनेता ने अभिनय की दुनिया में नाम कमाने का सपना देखा और उसे सच कर दिखाया।राजपाल यादव ने 1992 में थिएटर जॉइन किया। उन्होंने भारतेंदु नाट्य अकादमी में दाखिला लिया। दो साल थिएटर करने के बाद दिल्ली में एनएसडी गए। वहां एक्टिंग कोर्स करने के बाद 1997 में मुंबई पहुंचे। राजपाल यादव ने करियर की शुरुआत छोटे परदे से की। एक्टर ने एक बातचीत में जिक्र किया कि उन्होंने पुणे के यरवदा जेल पर 'स्वराज' नाम के डीडी वन पर आने वाले सीरियल से शुरुआत की। इंदु भूषण का रोल किया। 1998 में प्रकाश झा का मुंगेरी के भाई नौरंगी लाल आया, जिसमें उन्होंने नौरंगी का रोल किया। फिर साल 1999 में उन्हें पहली फिल्म मिली। और आज तक यह सिलसिला जारी है। छोटा कद होने के चलते इंडस्ट्री में भी उन्हें कम संघर्ष नहीं करना पड़ा। मगर, अपनी प्रतिभा के दम पर उन्होंने खुद को साबित किया। साल 1999 में उन्हें पहली फिल्म 'दिल क्या करे' मिली। हालांकि, उन्हें पहचान मिली फिल्म 'जंगल' (2000) में काम करके। इस फिल्म में उनका काम नोटिस किया गया। इसके बाद उन्हें पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ा। इसके बाद राजपाल ने 'हंगामा', 'वक्त', 'चुप-चुप के', 'गरम मसाला', 'फिर हेरा फेरी', 'भूल भुलैया', 'भागम भाग' और 'ढोल' जैसी फिल्मों में बतौर कॉमेडी एक्टर काम किया है। करियर के शुरुआती दिनों में राजपाल यादव ने कुछ फिल्मों में निगेटिव किरदार किए। अभिनेता करोड़ों की संपत्ति के मालिक हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक उनकी नेटवर्थ करीब 225 करोड़ रुपये है। राजपाल यादव ने कड़ी मेहनत कर गरीबी जैसे हालातों को तो हरा दिया। मगर, किस्मत ने भी उन्हें धोखा दे दिया। अभिनेता की पत्नी करुणा का निधन हो गया। बेटी को जन्म देने के बाद करुणा निधन हो गया। करुणा और राजपाल यादव की बेटी का नाम ज्योति है। उन पर मानो दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। राजपाल यादव दूसरी शादी नहीं करना चाहते थे। पहली पत्नी के निधन के कई साल बाद साल 2003 में शूटिंग के दौरान उनकी मुलाकात राधा से हुई। दोनों के बीच काफी नजदीकियां बढ़ गईं और दोनों एक-दूसरे को डेट करने लगे। फिर शादी का फैसला लिया।कनाडा में जन्मीं राधा को राजपाल पहली नजर में ही पसंद आ गए थे। एक इंटरव्यू के दौरान राधा ने बताया था, 'मैं जब पहली बार मुंबई पहुंची थी, तब राजपाल मुझे अपने घर लेकर गए थे। उन्होंने मुझे सरप्राइज देने के लिए घर का इंटीरियर उसी होटल की तरह करवाया था, जैसा कनाडा के उस होटल का था, जहां हम पहली बार मिले थे'। राजपाल यादव के वर्क फ्रंट की बात करें तो उन्हें बीते साल फिल्म 'भूल भुलैया 3' में देखा गया था।

स्पोर्ट्स

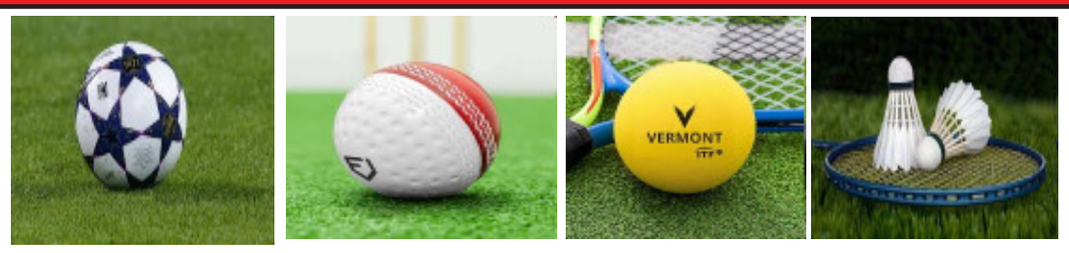

हरमनप्रीत ने दूसरी बार मुंबई इंडियंस को बनाया विजेता, दिल्ली कैपिटल्स लगातार तीसरी बार खिताब से चूकी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। टूर्नामेंट के तीसरे संस्करण का खिताबी मुकाबला शनिवार को ब्रेबोर्न स्टेडियम में खेला गया। इस मैच में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी मुंबई ने 20 ओवर में सात विकेट खोकर 149 रन बनाए। जवाब में दिल्ली निर्धारित ओवर में नौ विकेट पर सिर्फ 141 रन ही बना सकी। इस तरह मुंबई ने दूसरी बार खिताब अपने नाम कर लिया। नेट सिवर ब्रंट के हरफनमौला प्रदर्शन के दम पर मुंबई इंडियंस ने दिल्ली कैपिटल्स को आठ रन से हराकर फाइनल मैच जीत लिया। इसी के साथ मुंबई एक बार फिर महिला प्रीमियर लीग का खिताब जीतने में कामयाब हुई। टूर्नामेंट के तीसरे संस्करण का खिताबी मुकाबला शनिवार को ब्रेबोर्न स्टेडियम में खेला गया। इस मैच में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी मुंबई ने 20 ओवर में सात विकेट खोकर 149 रन बनाए। जवाब में दिल्ली निर्धारित ओवर में नौ विकेट पर सिर्फ 141 रन ही बना सकी। इस तरह मुंबई ने दूसरी बार खिताब अपने नाम कर लिया। इससे पहले हरमनप्रीत कौर की टीम ने दिल्ली को पहले संस्करण के फाइनल में हराकर ट्रॉफी अपने नाम की थी। 150 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी दिल्ली को उसके बल्लेबाजों का साथ नहीं मिला। टीम ने महज 44 के स्कोर पर चार विकेट गंवाए। कप्तान मेग लैनिंग 13 और शेफाली वर्मा सिर्फ चार रन बनाकर आउट हो गईं। इसके बाद जेस जोनासन को अमेलिया कर ने यास्तिका भाटिया के हाथों कैच कराया। वह सिर्फ 13 रन बना सकीं। दिल्ली के लिए मारिजन कप ने सर्वाधिक 40 रनों की पारी खेली। उनके अलावा जेमिमा रोड्रिग्स ने 30 रन बनाए। वहीं, एनाबेल सदरलैंड दो, सारा ब्राइस ने पांच, मिन्नू मणि ने चार रन बनाए। निकी प्रसाद 25 और श्री चरणी तीन रन बनाकर नाबाद रहीं। मुंबई के लिए नेट सिवर ब्रंट ने तीन जबकि अमेलिया कर ने दो विकेट लिए। वहीं, शबनम इस्माइल, हीली मैथ्यूज और साइका इशाक को एक-एक सफलता मिली।

इस मैच में मुंबई के बल्लेबाजों का प्रदर्शन निराशाजनक रहा। नेट सिवर ब्रंट और हरमनप्रीत कौर के अलावा उनका कोई बल्लेबाज दिल्ली की घातक गेंदबाजों के खिलाफ नहीं टिक सका। टीम ने 14 के स्कोर पर दो विकेट गंवा दिए थे। मारिजन कप ने हीली मैथ्यूज (3) और यास्तिका भाटिया (8) को अपना शिकार बनाया। इसके बाद ब्रंट और कप्तान कौर ने मोर्चा संभाला। दोनों के बीच 62 गेंदों में 89 रनों की साझेदारी हुई। श्री चरणी ने इंग्लैंड की ऑलराउंडर को मिन्नू मणि के हाथों कैच कराया। वह 30 रन बनाकर आउट हुईं। वहीं, भारतीय बल्लेबाज ने 44 गेंदों में 66 रन बनाए। उनके अलावा अमेलिया कर दो, जी कमालिनी 10, अमनजोत कौर ने 14ङ और संस्कृति गुप्ता ने आठङ रन बनाए। सजीवन सजना खाता भी नहीं खोल सकीं। दिल्ली के लिए मारिजन कप, जेस जोनासन और श्री चरणी को दो-दो विकेट मिले जबकि एनाबेल सदरलैंड को एक सफलता मिली।

ओलंपिक 2028 में विराट करेंगे संन्यास से वापसी कोहली ने दिया बड़ा बयान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। लॉस एंजिलिस ओलंपिक 2028 में 128 सालों बाद क्रिकेट भी शामिल होने जा रहा है। आखिरी बार साल 1900 में ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के बीच क्रिकेट मुकाबला खेला गया था। जिसमें ब्रिटेन ने फ्रांस को 158 रनों से जीत दर्ज करते हुए स्वर्ण पदक जीता था। अब एक बार फिर ओलंपिक में क्रिकेट की वापसी होने जा रही है। इस पर अब पूर्व भारतीय कप्तान ने बात की। उन्होंने आरसीबी इनोवेशन लैब भारतीय खेल शिखर सम्मेलन में बात करते हुए कहा कि ओलंपिक में क्रिकेट की वापसी एक सुखद अनुभव होगा।

वहीं, जब किंग कोहली से सवाल किया गया कि क्या वह टी20 क्रिकेट में संन्यास से वापसी करेंगे? इस पर उन्होंने मजाकिया अंदाज में जवाब देते हुए कहा कि, 'नहीं! ओलंपिक के लिए? शायद? अगर हम स्वर्ण पदक के लिए खेल रहे हैं, तो मैं एक खेल के लिए वापस आ सकता हूं। पदक जीतो और घर वापस आओ। यह बहुत अच्छी बात है। ओलंपिक चैंपियन बनना एक शानदार एहसास होगा।' टी20 विश्व कप 2024 का खिताब जीतने के बाद रोहित, विराट और रवींद्र जडेजा ने इस प्रारूप से संन्यास ले लिया था। भारत ने यह खिताब दक्षिण अफ्रीका को सात रन से हराकर अपने नाम किया था। भारतीय टीम को दूसरी बार टी20 विश्व कप का खिताब दिलाने के बाद स्टार खिलाड़ियों ने टी20 से संन्यास लेकर सभी को चौंका दिया था। आरसीबी इस बार रजत पाटीदार की अगुआई में खेलने उतरेगी, लेकिन फ्रेंचाइजी को अभी भी पहले आईपीएल के खिताब का इंतजार है।

आईपीएल का पहला मैच नहीं खेल सकेंगे हार्दिक पांड्या, पिछले संस्करण की गलती के कारण लगा प्रतिबंध

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। आईपीएल 2024 में मुंबई के कप्तान हार्दिक पांड्या पर धीमी ओवर गति के कारण बीसीसीआई ने उन पर 30 लाख का जुर्माना और एक मैच का निलंबन लगाया था। आईपीएल ने बयान में बताया कि हार्दिक पर आईपीएल की आचार संहिता के उल्लंघन के मामले में 30 लाख रुपये के जुर्माना के अलावा एक मैच का प्रतिबंध भी लगाया गया है। मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पांड्या आईपीएल 2025 का पहला मुकाबला नहीं खेल पाएंगे। उन पर एक मैच का प्रतिबंध लगा है। बता दें कि, आईपीएल के 18वें सत्र की शुरुआत 22 मार्च से होगी। मुंबई अपने अभियान का आगाज 23 मार्च को चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ मुकाबले से करेगी। इस मैच में स्टार ऑलराउंडर नहीं खेलेंगे। पिछले संस्करण में हुई गलती के कारण भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने उन्हें सजा सुनाई है।दरअसल, आईपीएल 2024 में मुंबई के कप्तान हार्दिक पांड्या पर धीमी ओवर गति के कारण बीसीसीआई ने उन पर 30 लाख का जुर्माना और एक मैच का निलंबन लगाया था। आईपीएल ने बयान में बताया कि हार्दिक पर आईपीएल की आचार संहिता के उल्लंघन के मामले में 30 लाख रुपये के जुर्माना के अलावा एक मैच का प्रतिबंध भी लगाया गया है। जब बोर्ड ने यह कार्रवाई की थी तब मुंबई का कोई मैच नहीं बचा था और टीम ग्रुप चरण में अपने सभी 14 मैच खेल चुकी थी, ऐसे में हार्दिक पर यह निलंबन अगले सीजन लागू होने की बात कही गई थी। अब वह 2025 सीजन का पहला मैच नहीं खेल सकेंगे। उस वक्त आईपीएल ने बयान में बताया था कि हार्दिक के अलावा प्लेइंग-11 में शामिल टीम के अन्य खिलाड़ियों पर 12 लाख रुपये या मैच फीस का 50 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। यह जुर्माना इंपैक्ट प्लेयर पर भी लागू होगा।आईपीएल 2024 सीजन से पहले मुंबई ने टीम में बड़ा बदलाव करते हुए हार्दिक पांड्या को गुजरात टाइटंस से ट्रेड कर टीम में शामिल किया था। हार्दिक लंबे समय तक मुंबई का हिस्सा रहे थे, लेकिन 2022 सीजन के लिए हुई बड़ी नीलामी से पहले मुंबई ने उन्हें रिलीज कर दिया था और हार्दिक को गुजरात ने अपना कप्तान बनाया। हार्दिक का गुजरात के साथ सफर काफी शानदार रहा और उन्होंने टीम को पहले ही सीजन विजेता बनाया, जबकि गुजरात पिछले सीजन उपविजेता रही। हालांकि आईपीएल 2024 से पहले ही हार्दिक ने गुजरात का साथ छोड़कर पुरानी फ्रेंचाइजी में लौटने का फैसला किया। हार्दिक को मुंबई ने रोहित की जगह कप्तान बनाया, लेकिन उनके नेतृत्व में मुंबई का प्रदर्शन काफी निराशाजनक रहा। मुंबई की टीम 14 मैचों में चार जीत और 10 हार के साथ आठ अंक लेकर सबसे नीचे 10वें नंबर पर रही।

मुंबई की धाकड़ बल्लेबाज के सिर पर सजी ऑरेंज कैप, बनाए 500 रन; न्यूजीलैंड की इस गेंदबाज ने जीती पर्पल कैप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। नेट सिवर ब्रंट के हरफनमौला प्रदर्शन के दम पर मुंबई इंडियंस ने दिल्ली कैपिटल्स को आठ रन से हराकर फाइनल मैच जीत लिया। इसी के साथ मुंबई एक बार फिर महिला प्रीमियर लीग का खिताब जीतने में कामयाब हुई। टूर्नामेंट के तीसरे संस्करण का खिताबी मुकाबला शनिवार को ब्रेबोर्न स्टेडियम में खेला गया। इस मैच में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी मुंबई ने 20 ओवर में सात विकेट खोकर 149 रन बनाए। जवाब में दिल्ली निर्धारित ओवर में नौ विकेट पर सिर्फ 141 रन ही बना सकी। इस तरह मुंबई ने महिला प्रीमियर लीग में भी सबसे ज्यादा रन बनाने वाली बल्लेबाज को

फाइनल के बाद ऑरेंज कैप दी जाती है। इस मामले में शीर्ष पर मुंबई इंडियंस की धाकड़ बल्लेबाज नेट सिवर ब्रंट रहीं। इंग्लैंड की 32 वर्षीय खिलाड़ी ने 10 पारियों में पांच अर्धशतकों की मदद से 523 रन बनाए। मौजूदा सीजन में उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 80ङ का रहा। दूसरे स्थान पर आरसीबी की एलिस पेरी रहीं जिन्होंने 372 रन बनाए।जिस तरह से सबसे ज्यादा रन बनाने वाली बल्लेबाज को ऑरेंज कैप थमाई जाती है ठीक उसी तरह टूर्नामेंट में सर्वाधिक विकेट चटकाने वाली गेंदबाज पर्पल कैप की दावेदार होती है। न्यूजीलैंड की 24 वर्षीय ऑलराउंडर अमेलिया कर ने अपनी साथी खिलाड़ी हीली मैथ्यूज को पीछे छोड़कर पर्पल कैप हासिल कर ली। वह इस टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा विकेट चटकाने वाले गेंदबाज रहीं। उन्होंने 7.75 के इकोनॉमी रेट से 18 विकेट हासिल किए। वहीं, मुंबई की हीली 8.22 इकोनॉमी से 18 विकेट लेकर दूसरे स्थान पर रहीं।

सनराइजर्स हैदराबाद के लिए राहत की खबर, नीतीश रेड्डी ने पास किया फिटनेस टेस्ट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। हैदराबाद ने आईपीएल 2025 से पहले नीतीश को छह करोड़ रुपये में रिटेन किया था। नीतीश ने पिछले सीजन 13 मैचों में 143 के स्ट्राइक रेट से 303 रन बनाए थे। नीतीश ने भारत के ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान भी प्रभावित किया था। आईपीएल 2025 से पहले सनराइजर्स हैदराबाद के लिए राहत की खबर आई है। उसके ऑलराउंडर नीतीश कुमार रेड्डी साइड स्ट्रेन से उबर गए हैं और उन्होंने फिटनेस टेस्ट पास कर लिया है। नीतीश जल्द ही टीम से जुड़ेंगे। नीतीश चोट के कारण जनवरी से मैदान से बाहर चल रहे हैं। न्यूज एजेंसी पीटीआई की रिपोर्ट के अनुसार, नीतीश ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में यो-यो टेस्ट सहित सभी फिटनेस टेस्ट पास कर लिए हैं और फिजियो ने उन्हें आईपीएल में खेलने

के लिए हरी झंडी दे दी है। आंध्र प्रदेश के 21 वर्षीय इस खिलाड़ी ने भारत के लिए आखिरी बार 22 जनवरी को मुकाबला खेला था। नीतीश इंग्लैंड के खिलाफ पहले टी20 मुकाबले के लिए भारतीय टीम में शामिल थे, लेकिन उन्होंने मैच में बल्लेबाजी या गेंदबाजी नहीं की थी। चेन्नई में हुए दूसरे टी20 से पहले नीतीश ने नेट्स पर अभ्यास किया था, लेकिन चोट के कारण वह पांच मैचों की सीरीज के शेष मैचों से बाहर हो गए थे। हैदराबाद ने आईपीएल 2025 से पहले नीतीश को छह करोड़ रुपये में रिटेन किया था। नीतीश ने पिछले सीजन 13 मैचों में 143 के स्ट्राइक रेट से 303 रन बनाए थे। नीतीश ने भारत के ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान भी प्रभावित किया था और मेलबर्न में खेले गए चौथे टेस्ट मैच में 114 रनों की महत्वपूर्ण पारी खेली थी। माना जा रहा है कि नीतीश जल्द से जल्द हैदराबाद टीम से जुड़ेंगे। आईपीएल 2025 की शुरुआत 22 मार्च से हो रही है और गत उपविजेता टीम अपने अभियान की शुरुआत 23 मार्च को हैदराबाद में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ करेगी।

राशिफल

मेष-:स्वास्थ्य संबंधी समस्या निकट है, इसलिए नियमित व्यायाम को दिनचर्या में शामिल करें और विश्वास करें कि इलाज से पहले सावधानी बरतना बेहतर है।

वृष- सप्ताह आपके लिए मंगलमय रहेगा। आपके रचनात्मक कार्यों में नाम होगा और आपको प्रसिद्धि भी मिलेगी। आप अपने मन के अनुसार निर्णय लेंगे।

मिथुन-: भावनात्मक रहेगा. आप खुद को अपनी अंतरतम भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने की स्थिति में भी पा सकते हैं। घरेलू काम थकाने वाले होंगे।

कर्क-:जीवनसाथी का प्यारा व्यवहार आपका दिन खुशनुमा बना सकता है. अपने ख़र्चों पर नियंत्रण रखें से ख़र्च करने से बचें। भावनात्मक रूप से जोखिम उठाना आपके पक्ष में जाएगा।

सिंह-: आप जिस काम को पूरा करना चाहते हैं वह आसानी से पूरा हो जाएगा. किसी महत्वपूर्ण कार्य के पूर्ण होने पर बधाई देने के लिए लोगों का आना-जाना रहेगा।

कन्या-: आप सभी परेशानियों और चिंताओं को पीछे छोड़कर अपने परिवार के साथ कुछ समय बिताना चाहेंगे आपका जाता हुआ दिखाई देगा जिसके बारे में आपने सोचा भी नहीं होगा।

तुला-:किसी मित्र की उदासीनता आपको परेशान करेगी. लेकिन अपने आप को शांत रखें। इसे समस्या न बनने दें और इससे बचने की कोशिश करें।

वृश्चिक-: भाग्य आपका पूरा साथ देगा। जिन चीजों के लिए आप लंबे समय से प्रयास कर रहे थे, वो पूरी होने वाली हैं। जो प्रयास आपने अपनी ओर से व्यर्थ समझे थे।

धनु-: भौतिक सुख-सुविधाओं की ओर रुझान बढ़ेगा. जीवनसाथी के साथ वैचारिक मतभेद रहेंगे। आत्मबल में वृद्धि होगी। पारिवारिक समस्याओं से विचलित हो सकता है।

मकर-:खुद पर हद से ज्यादा दबाव न डालें और पर्याप्त आराम करें. रियल एस्टेट से जुड़े निवेश आपको अच्छा मुनाफा देंगे। आपका अडियल रवैया घर में लोगों का दिल दुखा सकता है।

कुंभ-: आपका झुकाव अध्यात्म की ओर रहेगा, मंदिर जाने या कोई धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बना सकते हैं. आज आपको खुशी पाने के लिए अपने स्वभाव में थोड़ा लाने की जरूरत है।

मीन-: आपको कार्यक्षेत्र में सुख-समृद्धि की प्राप्ति होगी. परिवार और जीवन साथी का सहयोग मिलने की संभावना है। हालांकि छात्रों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए थोड़ी अधिक मेहनत करनी पड़

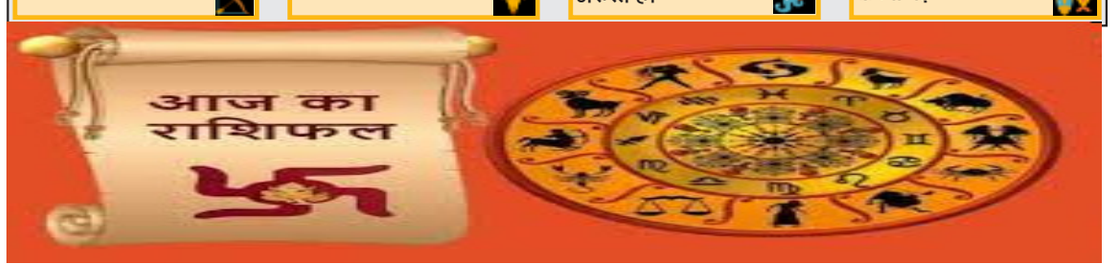

टी20 के बाद वनडे से भी संन्यास लेंगे विराट कोहली दिग्गज ने दिया चौंकाने वाला जवाब, कही बड़ी बात

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। हाल ही में समाप्त हुई चैंपियंस ट्रॉफी के बाद कयास लगाए जा रहे थे किंग कोहली वनडे से संन्यास का एलान कर देंगे। हालांकि, अब उन्होंने इन अफवाहों को खारिज कर दिया है। दिग्गज खिलाड़ी ने बताया कि वह अभी संन्यास के विषय में नहीं सोच रहे हैं। वह खेल का लुत्फ उठा रहे हैं। भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली वनडे क्रिकेट से संन्यास नहीं लेंगे। उन्होंने खुद इस बात का खुलासा किया है। दिग्गज खिलाड़ी ने बताया कि वह अभी संन्यास के विषय में नहीं सोच रहे हैं। वह खेल का लुत्फ उठा रहे हैं और उनके अंदर की 'प्रतिस्पर्धात्मक प्रवृत्ति' पूरी तरह बरकरार है। बता दें कि, हाल ही में समाप्त हुई चैंपियंस ट्रॉफी के बाद कयास लगाए जा रहे थे किंग कोहली वनडे से संन्यास का एलान कर देंगे। हालांकि, अब उन्होंने इन अफवाहों को खारिज कर दिया है। कोहली चैंपियंस ट्रॉफी के दौरान शानदार फॉर्म में नजर आए थे और उन्होंने पांच मैचों में 54.50 के औसत से 218 रन बनाए थे जिसमें एक शतक और एक अर्धशतक शामिल है। उन्होंने बांग्लादेश के खिलाफ पहले मैच में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया था, लेकिन पाकिस्तान के खिलाफ नाबाद शतक जड़कर भारत को जीत दिलाई थी। इसके बाद न्यूजीलैंड के खिलाफ ग्रुप चरण के आखिरी मैच में सस्ते में आउट हुए। कोहली ने फिर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल मैच में 84 रन बनाए और भारत को खिताबी मैच में पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। वनडे से संन्यास पर बात करते हुए अनुभवी बल्लेबाज ने कहा- 'घबराइए मत। मैं कोई घोषणा नहीं कर रहा हूं। अभी तक सब कुछ ठीक है। मुझे अभी भी गेम खेलना पसंद है।' इस दौरान विराट ने बताया कि उन्होंने अपने संन्यास को लेकर पूर्व मुख्य कोच राहुल द्रविड़ से चर्चा की थी। उन्होंने कहा- 'आप जानते हैं कि प्रतिस्पर्धी प्रवृत्ति आपको (रिटायरमेंट के सवाल का) जवाब खोजने की अनुमति नहीं देती है। इस बारे में मेरी राहुल द्रविड़ के साथ बहुत ही दिलचस्प बातचीत हुई। उन्होंने कहा कि आपको हमेशा खुद से जुड़े रहना चाहिए। अपने जीवन में आप कहां हैं, इसका पता लगाएं और इसका जवाब इतना आसान नहीं है। हो सकता है कि आप एक बुरे दौर से गुजर रहे हों और आपको लगे कि अब यही है। लेकिन ऐसा नहीं हो सकता। लेकिन फिर जब समय आएगा तो मेरी प्रतिस्पर्धी प्रवृत्ति मुझे इसे स्वीकार करने की अनुमति नहीं देगी। शायद एक और महीना। शायद छह और महीने। इसलिए मुझे लगता है कि यह एक बढ़िया संतुलन है। अपने जीवन के इस समय में मैं बहुत खुश महसूस कर रहा हूं।'चैंपियंस ट्रॉफी के बाद अब दाएं हाथ के बल्लेबाज आईपीएल में खेलेंगे। वह शनिवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के कैंप से जुड़ गए। कोहली की नजरें अब आईपीएल में जलवा बिखेरने पर हैं। कोहली चाहेंगे कि चैंपियंस ट्रॉफी की फॉर्म आईपीएल में भी बरकरार रहे। कोहली आईपीएल इतिहास में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं और उनकी नजरें ऑरेंज कैप के साथ ही पहली आईपीएल ट्रॉफी जीतने पर होगी।

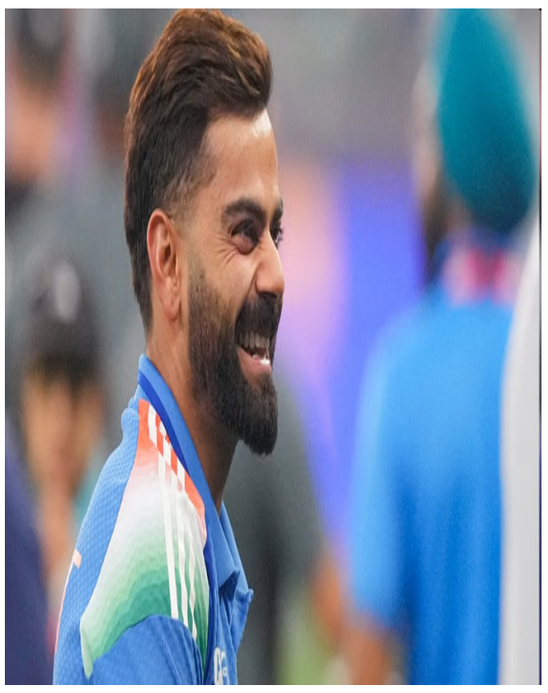

संक्षिप्त समाचार

सीएम नायडू बोले- मंदिर में केवल हिंदू करेंगे काम

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। आंध्र प्रदेश के सीएम नायडू ने तिरुमला मंदिर में सिर्फ हिंदुओं को नौकरी देने और दुनियाभर में वेंकटेश्वर मंदिर बनाने की योजना की घोषणा की। उन्होंने सेवन हिल्स क्षेत्र में व्यवसायीकरण रोकने का भी आह्वान किया। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने शुक्रवार को ऐलान किया है कि तिरुमला मंदिर में अब केवल हिंदुओं को ही काम पर रखा जाएगा।?दूसरे समुदायों के लोगों

को तिरुमला मंदिर से अन्य जगहों पर स्थानांतरित किया जाएगा। उन्होंने देशभर के सभी राज्यों की राजधानियों में वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर बनाने की योजना की भी घोषणा की।नायडू ने कहा, भगवान वेंकटेश्वर की संपत्ति की सुरक्षा के लिए एक पवित्र धागा बांधा गया है। विदेशों में बसे हिंदू भी चाहते हैं कि वहां भगवान वेंकटेश्वर के मंदिर बनाए जाएं, इसलिए दुनियाभर में जहां भी हिंदू समुदाय की बड़ी संख्या है, वहां वेंकटेश्वर मंदिर स्थापित किए जाएंगे। सेवन हिल्स क्षेत्र के पास वाणिज्यिक गतिविधियों के बारे में नायडू ने कहा कि क्षेत्र से सटे मुमताज होटल के लिए पहले अनुमति दी गई थी। हालांकि, सरकार ने अब 35.32 एकड़ भूमि पर बनने वाले होटल के लिए मंजूरी रद्द करने का फैसला किया है।उन्होंने जोर देकर कहा कि सेवन हिल्स के पास कोई व्यवसायीकरण नहीं होना चाहिए। वहीं सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि इस क्षेत्र में किसी भी निजी व्यक्ति को व्यवसाय की अनुमति नहीं दी जाएगी। सीएम ने कहा कि 2003 में उन पर हुए जानलेवा हमले में वह केवल भगवान वेंकटेश्वर की कृपा से जीवित बच सके।

'वांछित शख्स का समर्थन सब कुछ बयां करता है' जाकिर नाइक की मेजबानी के लिए पाकिस्तान को भारत ने लगाई फटकार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। दरअसल, शुक्रवार को अपने साप्ताहिक प्रेस ब्रीफिंग के दौरान जायसवाल से न्याय का सामना करने के लिए जाकिर नाइक के प्रत्यर्पण की मांग के बावजूद उसे दिए गए

आतिथ्य पर भारत के रुख के बारे में पूछा गया। इस पर उन्होंने कहा कि यह पहली बार नहीं है कि पाकिस्तान में उसके साथ ऐसा किया गया है। यह दर्शाता है कि उसके मेजबानों का दृष्टिकोण कैसा है और यह हमारे लिए क्या मायने रखता है भारत ने भगोड़े इस्लामिक उपदेशक जाकिर नाइक को लेकर पाकिस्तान के नरम रुख पर और उसके आतिथ्य पर चिंता जाहिर की है। विदेश मंत्रालय (एमईए) के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि वांछित शख्स का समर्थन सब कुछ बयां करता है। उन्होंने इस बात का भी उल्लेख किया कि एक वांछित व्यक्ति की मेजबानी करना, उसे शरण देना पाकिस्तान के दृष्टिकोण को कैसे स्पष्ट करता है, खासकर तब जब ऐसा शख्स पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ और पंजाब की मुख्यमंत्री मरियम नवाज से मुलाकात कर रहा हो। दरअसल, शुक्रवार को अपने साप्ताहिक प्रेस ब्रीफिंग के दौरान जायसवाल से न्याय का सामना करने के लिए जाकिर नाइक के प्रत्यर्पण की मांग के बावजूद उसे दिए गए आतिथ्य पर भारत के रुख के बारे में पूछा गया। इस पर उन्होंने कहा कि यह पहली बार नहीं है कि पाकिस्तान में उसके साथ ऐसा किया गया है। यह दर्शाता है कि उसके मेजबानों का दृष्टिकोण कैसा है और यह हमारे लिए क्या मायने रखता है? यहां वांछित व्यक्ति को इतना समर्थन देने के संदर्भ में इसका क्या मतलब है?18 मार्च को 'द एक्सप्रेस ट्रिब्यून' की एक रिपोर्ट के मुताबिक, जाकिर नाइक ने पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ और पंजाब की मुख्यमंत्री मरियम नवाज से रायविंड स्थित उनके आवास पर मुलाकात की थी। शरीफ परिवार से बैठक के दौरान पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) नेताओं ने कथित तौर पर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। इस बीच पिछले सप्ताह नाइक से मुलाकात के बाद पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद हफीज की आलोचना हुई थी। हफीज ने सोशल मीडिया पर अपनी मुलाकात की तस्वीरें साझा की थीं। हफीज ने पोस्ट किया, 'जाकिर नाइक के साथ सुखद मुलाकात।' उन्होंने साथ ही एक रेस्तरां में ली गई उनकी एक तस्वीर भी पोस्ट की थी। इसे लेकर सोशल मीडिया पर खासी नाराजगी देखने को मिली थी। एक यूजर ने लिखा, 'यही एक कारण है कि भारतीय क्रिकेट टीम और भारतीय सरकार पाकिस्तान नहीं आना चाहती।' जाकिर नाइक वर्तमान में भारत में कथित मनी लॉन्ड्रिंग और चरमपंथ को भड़काने के आरोपों में वांछित है। इससे पहले 24 अक्तूबर, 2024 को पाकिस्तान के चर्च के धर्मसभा के अध्यक्ष बिशप रेवरेंड आजाद मार्शल ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी को एक पत्र लिखा था। उन्होंने पाकिस्तान में राजकीय अतिथि के रूप में अपनी हालिया यात्रा के दौरान ईसाई समुदाय और उनकी मान्यताओं के बारे में जाकिर नाइक की ओर से की गई टिप्पणियों पर चिंता व्यक्त की थी।

जमानत के वक्त आरोपपत्र दाखिल होने पर गिरफ्तारी की शर्त खारिज, शीर्ष अदालत ने पटना हाईकोर्ट का फैसला पलटा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अग्रिम जमानत मिलने के बाद सिर्फ आरोपपत्र दाखिल होने पर आरोपी को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता। शीर्ष अदालत ने पटना हाईकोर्ट की ऐसी शर्त के आदेश को रद्द किया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा

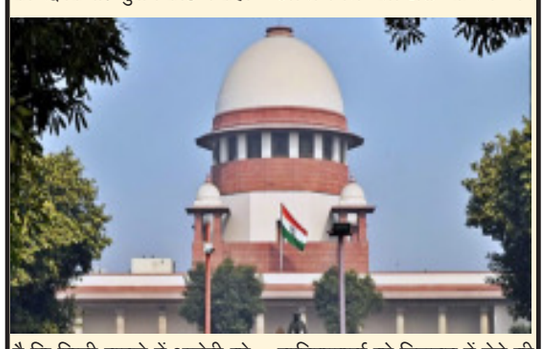

है कि किसी मामले में आरोपी को अग्रिम जमानत देते समय हाईकोर्ट यह निर्देश नहीं दे सकता कि आरोपपत्र दाखिल होने पर उसे गिरफ्तार कर सलाखों के पीछे डाल दिया जाएगा। जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह और जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा की पीठ ने पटना हाईकोर्ट के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर यह फैसला सुनाया। साथ ही हाईकोर्ट की ओर से 31 अगस्त, 2024 को आरोपी रितेश कुमार को अग्रिम जमानत देते समय लगाई गई ऐसी शर्त खारिज कर दी।हाईकोर्ट ने कहा था कि यदि याचिकाकर्ता के खिलाफ अपराध से जुड़े आरोपपत्र दाखिल किए जाते हैं तो उस स्थिति में वर्तमान अग्रिम जमानत आदेश अपना प्रभाव खो देगा और ट्रायल कोर्ट यह सुनिश्चित करने के लिए सभी कठोर कदम उठाएगा कि याचिकाकर्ता सलाखों के पीछे हो। याचिकाकर्ता के वकील ने कहा कि आरोपपत्र दाखिल करने पर याचिकाकर्ता को हिरासत में लेने की ऐसी शर्त उचित नहीं है।पीठ ने महसूस किया कि याचिकाकर्ता के वकील का यह कहना सही है कि ऐसा कोई विशिष्ट निर्देश नहीं हो सकता था कि आरोपपत्र प्रस्तुत करने के बाद न्यायालय को यह सुनिश्चित करने के लिए सभी बलपूर्वक कदम उठाने चाहिए कि याचिकाकर्ता सलाखों के पीछे हो। पीठ ने कहा, हमारा दृढ़ मत है कि जब भी कोई न्यायालय अग्रिम जमानत या जमानत के लिए आवेदन पर विचार करता है तो यह एक समग्र आदेश होता है और एक भाग को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है।

'न्यायिक जवाबदेही के मुद्दे का समाधान हो गया होता एनजेएसी का नाम लिए बिना बोले धनखड़

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने न्यायिक जवाबदेही की कमी पर चिंता जताई और एनजेएसी रद्द होने को इसका कारण बताया। उन्होंने दिल्ली हाईकोर्ट के जज के घर नकदी मिलने की घटना

को उजागर होने में देरी पर भी सवाल उठाए।राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग (एनजेएसी) का नाम लिए बिना राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा कि अगर संसद में सर्वसम्मति से पारित किए गए तंत्र को अनुमति दी गई होती तो न्यायिक जवाबदेही के मुद्दे का समाधान हो गया होता। 2014 में संसद से पारित एनजेएसी को 2015 में सुप्रीम कोर्ट ने असांविधानिक करार दिया था।दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा के बंगले से बड़ी मात्रा में नकदी मिलने का मुद्दा कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने उठाया। इस पर सभापति ने कहा कि जिस तंत्र को इस सदन ने सर्वसम्मति से पारित किया था, बिना किसी मतभेद के, सरकार की पहल के समर्थन में थे। मैं उस ऐतहासिक कानून की मौजूदा स्थिति जानना चाहता हूं। इसे भारतीय संसद ने पास किया था, इसे देश के 16 राज्य विधानसभाओं का समर्थन मिला था और इस पर संविधान के अनुच्छेद 111 के तहत माननीय राष्ट्रपति ने हस्ताक्षर किए थे, लेकिन उसे खत्म कर दिया गया। उन्होंने कहा कि उस ऐतिहासिक कानून को इस संसद से अभूतपूर्व समर्थन मिला। उसने इस समस्या को बहुत गंभीरता से लिया था। यदि उस समस्या का समाधान पहले कर लिया गया होता तो शायद हमें इस प्रकार के मुद्दों का सामना नहीं करना पड़ता।सभापति ने कहा कि मुझे इस बात की चिंता है कि यह घटना घटित हुई और तुरंत सामने नहीं आई। यदि यह किसी राजनेता के साथ होता है ।

महाराष्ट्र के शिरावने में एमआईडीसी परिसर में लगी भीषण आग, बुझाने के लिए आठ घंटे से जारी है मशक्कत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

महाराष्ट्र। महाराष्ट्र के शिरावने में महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम (श्छण्) क्षेत्र में भीषण आग लगी है। बीते आठ घंटे से आग बुझाने की कड़ी मशक्कत की जा रही है। महाराष्ट्र के शिरावने में महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम (श्छण्) क्षेत्र में भीषण आग लगने की खबर है। सूचना मिलते ही दमकलकर्मियों को बड़ी संख्या में मौके पर भेजा गया। चिंताजनक पहलू ये है कि आग बीते आठ घंटे से जल रही है। रात करीब 11 बजे लगी आग को बुझाने के लिए 10 से अधिक दमकल की गाड़ियों को भेजा गया। इस संबंध में दमकल विभाग के अधिकारी एसएल पाटिल ने बताया कि 12 दमकल गाड़ियां मौके पर हैं। हम जल्द से जल्द आग पर काबू पाने की कोशिश कर रहे हैं। कोई हताहत नहीं हुआ है। फिलहाल, जान-माल के नुकसान और आग लगने के कारणों का पता नहीं लगा है। शिरावने में लगी आग के संबंध में शनिवार सुबह करीब साढ़े पांच बजे आई रिपोर्ट के मुताबिक महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम (श्छण्) क्षेत्र में शुक्रवार रात करीब 11 बजे लगी आग पर काबू नहीं पाया जा सका है। 10 दमकल गाड़ियां मौके पर हैं। इसके सवा घंटे बाद भी समाचार एजेंसी एएनआई की रिपोर्ट में बताया गया कि आग बुझाने की मशक्कत जारी है।

पूजा की जगह पढ़ते थे नमाज, शादी के बदले निकाह, संघ के प्रयास से हिंदू वाढा समुदाय की बदली तस्वीर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने वार्षिक प्रतिवेदन में बताया कि आरएसएस के प्रयास से गुजरात के बन्नी इलाके में वाढा हिंदू समुदाय ने फिर से अपनी परंपराएं अपनाईं। मंदिर निर्माण, शिक्षा और सामूहिक विवाह के आयोजन से जीवन स्तर सुधारने की पहल हुई। पश्चिमी कच्छ के पाकिस्तान सीमावर्ती क्षेत्र के मुस्लिम बहुल बन्नी इलाके से जुड़े वाढा हिंदू समुदाय दशकों से अपने धर्म से जुड़ी परंपरा, पूजा पद्धति और संस्कृति छोड़ चुके थे। इस समुदाय में हिंदू रीति से शादी की जगह निकाह पढ़ाया जाने लगा था। दशकों बाद संघ के प्रयास से इस समुदाय ने हिंदू पूजा पद्धति अपनाई। इसके अलावा पहली बार बीते साल 8 दिसंबर को संघ के प्रयास से यहां सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की शुक्रवार से शुरू हुई बैठक में इसकी जानकारी सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने वार्षिक प्रतिवेदन के माध्यम से दी। प्रतिवेदन के जरिए उन्होंने बताया कि संघ के प्रयास से बन्नी इलाके में मंदिरों का निर्माण और शिक्षा देने का सिलसिला शुरू हुआ है। इस समुदाय के जीवन स्तर को सुधारने के लिए

इस इलाके के चार गांवों में व्यापक सहयोग के जरिए 65 परिवारों को पक्का मकान मुहैया कराया गया है। प्रतिवेदन में कहा गया है कि पाकिस्तान के इस सीमावर्ती इलाके के वाढा समुदाय इलाके के बहुसंख्यक मुसलमानों के प्रभाव, गरीबी, अशिक्षा के कारण हिंदू धर्म की परंपरा त्याग कर इस्लामिक परंपरा अपना चुके थे। इन समुदायों में हिंदू रीति से शादी की जगह निकाह पढ़ाया जाता था। शव का दाह संस्कार की जगह उसे दफनाया जाता था। यहां तक कि इनके नाम, इनका पहनावा, पूजा पद्धति सबकुछ इस्लामिक हो चुका था।सेवा विभाग ने शुरू की थी मुहिम...इस आशय की सूचना मिलने के बाद संघ के सेवा विभाग ने बदलाव की मुहिम शुरू की। इस मुहिम के तहत इस समुदाय को शिक्षा से जोड़ने के बाद फिर से हिंदू पद्धति अपनाने के लिए राजी किया गया। इनका जीवन स्तर सुधारने, सफाई के प्रति जागरुकता लाने के तमाम प्रयास किए गए। इसके बाद पहली बार इस इलाके में हिंदू रीति से सामूहिक विवाद का आयोजन किया गया। प्रतिवेदन में बांग्लादेश की स्थिति पर गहरी चिंता जताते हुए वहां सत्ता परिवर्तन के बाद मजहबी कट्टरपंथियों द्वारा हिंदू समाज और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों पर हुए बर्बतापूर्ण हमले की निंदा की गई है। हिंदू समाज का बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के समर्थन में खड़ा होने का आह्वान करते हुए कहा गया है कि इनके मानवाधिकारों की रक्षा के लिए एकजुटता जरूरी है। इसके लिए बैठक में बांग्लादेश सरकार पर दबाव बनाने कीर णनीति भी तैयार की जाएगी।?प्रतिवेदन में बांग्लादेश के हिंदुओं के साहस की प्रशंसा की गई है। कहा-गया कि जिन हालात में वहां हिंदू अत्याचार का सामना कर रहे हैं व सराहनीय है।

कई संसद सदस्यों का वजन अधिक, अपनी सेहत पर ध्यान दें स्वास्थ्य मंत्री नड्डा की नसीहत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने सांसदों को सेहत का ख्याल रखने की सलाह दी और जनता को मुफ्त स्वास्थ्य जांच के लिए प्रेरित करने को कहा। उन्होंने कहा कि अब तक 35 करोड़ लोगों की जांच हुई, जिसमें लाखों मरीज गंभीर बीमारियों से ग्रसित मिले। सांसद हेमा मालिनी ने आयुष्मान योजना में अस्पतालों की मनमानी का मुद्दा उठाया।केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने सरकार की ओर से नागरिकों की मुफ्त स्वास्थ्य जांच के लिए चलाए जा रहे अभियान की जानकारी देने के साथ सांसदों को अपनी सेहत का ख्याल रखने की सलाह भी दी। उन्होंने कहा, यहां कई सदस्य हैं, जो ओवरवेट हैं। हमें सबके स्वास्थ्य की चिंता है। साल में एकबार संपूर्ण स्वास्थ्य जांच अवश्य कराएं। इसके लिए स्वास्थ्य मंत्रालय तैयार बैठा है।नड्डा शुक्रवार को प्रश्नकाल के दौरान एक पूरक सवाल का जवाब दे रहे थे। इस दौरान लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने मंत्री से कहा, आप तो सदस्यों से कहें कि क्षेत्र की जनता की स्वास्थ्य जांच कराएं। स्वास्थ्य मंत्री ने सांसदों से अपील की कि वे अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्र के नागरिकों को साल में एक बार संपूर्ण स्वास्थ्य जांच के लिए प्रेरित करें। साथ ही कहा, जनता की जांच तो जरूरी है ही, सदस्यों को भी अपनी मेडिकल जांच करानी चाहिए। सरकार ने आयुष्मान आरोग्य मंदिर में 30 साल से अधिक उम्र के सभी नागरिकों की स्वास्थ्य जांच अभियान शुरू किया है। मुफ्त जांच का उद्देश्य उच्च रक्तचाप, मधुमेह और कैंसर

का पता लगाना है।नड्डा ने बताया कि अभियान शुरू होने के बाद से अब तक 35 करोड़ लोगों की जांच की गई, जिनमें 4.2 करोड़ उच्च रक्तचाप और 2.6 करोड़ मधुमेह के रोगी पाए गए। 29.35 करोड़ लोगों की ओरल कैंसर की जांच की गई, जिनमें से 1.18 करोड़ कैंसर रोगी पाए गए। नड्डा ने कहा, आप सभी सदस्यों से अपील है हर साल सभी की स्वास्थ्य जांच पूरी तरह से कराई जाए। मथुरा की भाजपा सांसद हेमा मालिनी ने शुक्रवार को आयुष्मान योजना मामले में अस्पतालों की मनमानी पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि तमाम अस्पताल आयुष्मान कार्ड धारक मरीज को पैसे देकर इलाज कराने पर मजबूर करते हैं। हेमामालिनी ने कहा कि यह बात सच है कि 50 करोड़ लाभार्थियों वाली यह योजना स्वास्थ्य क्षेत्र में दुनिया की सबसे बड़ी योजना है। लेकिन इससे जुड़ी कई शिकायतें हैं। मरीजों को अस्पतालों में बेड नहीं मिलता। जरूरी दस्तावेज न होने का बहाना बनाकर भी अस्पताल मरीजों को इस योजना के लाभ से वंचित कर रहे हैं। इसके जवाब में स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि अगर अस्पतालों की मनमानी से जुड़ा कोई मामला सांसद के पास है तो वह उन्हें अलग से बता दें। इस मामले में कार्रवाई की जाएगी।

जंगल के बजाय शहरी इलाके में लगने वाली आग का धुआं ज्यादा खतरनाक, तीन गुना अधिक होती हैं मौतें

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। शहरी के आसपास लगने वाली आग का धुआं जंगलों की आग से ज्यादा घातक होता है, जिससे समय से पहले मौतों की संभावना तीन गुना बढ़ जाती है। इसमें जलती हुई इमारतों से निकलने वाले विषैले रसायन घनी आबादी को सीधे प्रभावित करते हैं। एक अध्ययन में यह जानकारी निकलकर सामने आई है। शहरी क्षेत्रों में लगने वाली आग से उठने वाला धुआं दूरदराज के जंगलों में लगी आग की तुलना में अधिक जानलेवा और खतरनाक है। यह सेहत के लिए बेहद हानिकारक होता है। यह निष्कर्ष यूएस नेशनल साइंस फाउंडेशन सेंटर फॉर एटमॉस्फेरिक रिसर्च के वैज्ञानिकों के नेतृत्व में किए गए एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन में सामने आया है। इस शोध में वन्यभूमि-शहरी इंटरफेस (डब्ल्यूयूआई) आग के डाटा और उन्नत कंप्यूटर मॉडलिंग तकनीकों का उपयोग किया गया है। शोध के अनुसार जंगलों से सटे शहरी इलाकों में लगने वाली आग से निकलने वाले धुएं से होने वाली समय से पहले मौतों की संभावना सामान्य जंगल की

आग की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक होती है। इसका कारण यह है कि ऐसी आग और उससे निकलने वाले प्रदूषक सीधे आबादी वाले क्षेत्रों के करीब होते हैं। भले ही डब्ल्यूयूआई आग से वैश्विक स्तर पर कम प्रदूषण फैलता हो, लेकिन इसका प्रभाव गंभीर होता है क्योंकि यह घनी आबादी को प्रभावित करता है। वन्यभूमि शहरी इंटरफेस उन इलाकों को कहा जाता है जहां जंगल और शहरी क्षेत्र आपस में मिलते हैं। ये क्षेत्र लगातार बढ़ रहे हैं और अब दुनिया की कुल भूमि का लगभग पांच फीसदी हिस्सा हो चुके हैं। ये अंटार्कटिका को छोड़कर सभी महाद्वीपों में फैले हुए हैं। इन क्षेत्रों में आग तेजी से विनाशकारी हो रही है।शोधकर्ताओं के अनुसार डब्ल्यूयूआई आग से निकलने वाले धुएं में विषैले तत्व अधिक होते हैं क्योंकि इसमें पेड़ों और वनस्पतियों के साथ-साथ इमारतों, घरों और अन्य संरचनाओं की सामग्री भी जलती है। ये जलती हुई संरचनाएं कई हानिकारक रसायन छोड़ती हैं, जो हवा में मिलकर अधिक जहरीला धुआं बनाते हैं। शोधकर्ताओं ने मॉडल के जरिए कार्बन मोनोऑक्साइड जैसे रासायनिक ट्रेसर का विश्लेषण कर यह समझा गया कि डब्ल्यूयूआई आग और सामान्य जंगल की आग से निकलने वाले प्रदूषण में क्या अंतर है। 2020 में छह महाद्वीपों में सभी आग से होने वाले कुल उत्सर्जन में डब्ल्यूयूआई आग की हिस्सेदारी केवल 3.1 फीसदी थी। लेकिन इसकी वजह से समय से पहले होने वाली मौतों में इसका योगदान 8.8 फीसदी रहा, क्योंकि इस तरह की आग से निकलने वाले धुएं का सीधा प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है।

युद्धविराम लागू होने पर ही अमेरिकी-इस्त्राइली बंधक को रिहा करेंगे', हमास समझौता करने का बना रहा दबाव

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

हमास का आरोप है कि इस्त्राइल ने शनिवार को गाजा में हवाई हमला किया, जिसमें नौ लोगों की मौत हो गई। इस्त्राइल का कहना है कि वे संदिग्ध आतंकी थे, वहीं हमास का दावा है कि मरने वालों में स्थानीय पत्रकार और चिकित्सा कर्मी शामिल थे। हमास दूसरे चरण के युद्धविराम समझौते के लिए इस्त्राइल पर दबाव बना रहा है औ? इसी के तहत उसने शनिवार को कहा है कि अगर युद्धविराम समझौता लागू होगा, तभी वे एक अमेरिकी-इस्त्राइली बंधक को रिहा करेंगे। वहीं जहां एक तरफ हमास युद्धविराम समझौते पर दबाव बना रहा है, वहीं इस्त्राइल ने भी अपने तरीके से दबाव बनाना शुरू कर दिया है। हमास का आरोप है कि इस्त्राइल

ने शनिवार को गाजा में हवाई हमला किया, जिसमें नौ लोगों की मौत हो गई। इस्त्राइल का कहना है कि वे संदिग्ध आतंकी थे, वहीं हमास का दावा है कि मरने वालों में स्थानीय पत्रकार और चिकित्सा कर्मी शामिल थे।हमास के एक शीर्ष नेता ने कहा कि युद्धविराम समझौते के दूसरे चरण की शुरुआत बंधकों की रिहाई से होगी और यह 50 दिन से ज्यादा नहीं चलना चाहिए। साथ ही हमास ने मांग की कि इस्त्राइल गाजा में राशन और अन्य जरूरत के सामान की आपूर्ति को फिर से शुरू करे। हमास ने गाजा और मिस्त्र की सीमा पर रणनीतिक तौर पर अहम जगह से भी इस्त्राइली सेना की वापसी की मांग की है। हालांकि इस्त्राइल इससे साफ इनकार कर चुका है और उनका कहना है कि वे यहां से हथियारों की तस्करी पर रोक जारी रखेंगे। हमास ने बंधकों के बदले में फलस्तीनी कैदियों को भी रिहा करने की मांग उठाई है। हमास की कैद में जो बंधक बचे हुए हैं, उनमें 21 साल का इडन एलेक्जेंडर भी शामिल है। इडन अमेरिका के न्यूजर्सी में पला-बढ़ा है।

डोनाल्ड ट्रंप के आदेश के बाद अमेरिका का हूती विद्रोहियों पर हवाई हमला, 24 लोगों की मौत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शनिवार को यमन की राजधानी सना पर हवाई हमलों की एक श्रृंखला का आदेश देने का एलान किया था। ट्रंप ने कहा था कि जब तक ईरान समर्थित हूती विद्रोही महत्वपूर्ण समुद्री गलियारे पर जहाजों पर हमले बंद नहीं कर देते, तब तक वे अत्यधिक घातक बल का प्रयोग करेंगे। आइए इस बारे में विस्तार से जानते हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के आदेश के बाद अमेरिका ने यमन में हूती विद्रोहियों पर हवाई हमले किए। इसमें 24 लोगों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि यह कार्रवाई लाल सागर में

जहाजों पर हो रहे हमलों के विरोध में की गई। ट्रंप ने हूतियों के मुख्य समर्थक ईरान को भी चेतावनी दी कि उसे समूह को समर्थन देना तुरंत बंद कर देना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर ईरान ने अमेरिका को धमकी दी, तो हम आपको पूरी तरह से जवाबदेह ठहराएंगे और फिर हम अच्छा व्यवहार नहीं करेंगे!शनिवार को ट्रंप ने अपने अधिकारियों को यमन की राजधानी सना पर हवाई हमले करने का आदेश दिया था। इसकी जानकारी देते हुए ट्रंप ने वादा किया कि जब तक ईरान समर्थित हूती विद्रोही महत्वपूर्ण समुद्री गलियारे पर जहाजों पर हमले बंद नहीं कर देते, तब तक वे अत्यधिक घातक बल का प्रयोग करेंगे।ट्रंप ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, ठहमारे बहादुर युद्धक अभी अमेरिकी शिपिंग, वायु और नौसैनिक संपत्तियों की रक्षा करने और नौवहन स्वतंत्रता को बहाल करने के लिए आतंकवादियों के ठिकानों, नेताओं और मिसाइल सुरक्षा पर हवाई हमले कर रहे हैं।